"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૭૮

જ્યોતિષસાર

: દ્રવ્ય સહાયક :

પૂજ્ય આચાર્ય શ્રી નીતિસૂરિજી મ. સા.ના સમુદાયના
પૂ.સાધ્વી શ્રી લલિતપ્રભાશ્રીજી મ.સા.,પૂ.સાધ્વી શ્રી કલ્પશીલાશ્રીજી મ.સા.,
પૂ.સાધ્વી શ્રી કીર્તિશીલાશ્રીજી મ.સા., પૂ.સાધ્વી વિનયશીલાશ્રીજી મ.સા.
ની પ્રેરણાથી રાની સ્ટેશન શ્રાવિકા ઉપાશ્રયની
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૯ ઈ. ૨૦૧૩

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६**	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	**विविध तीर्थ कल्प**	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	**सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः**	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	**व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका**	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	**चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)**	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	**व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय**	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	**चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी**	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	**विवेक विलास**	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	**पञ्चशती प्रबोध प्रबंध**	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	**सन्मतितत्त्वसोपानम्**	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	**मोहराजापराजयम्**	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	**क्रियाकोश**	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	**कालिकाचार्यकथासंग्रह**	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	**सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका**	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	**जन्मसमुद्रजातक**	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	**मेघमहोदय वर्षप्रबोध**	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	એન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
201	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

श्रीवीतरागाय नमः ।

जैनाचार्य प्रणीत

ज्योतिषसार प्राकृत

हिन्दी सानुवाद

अनुवादक—

पण्डित भगवानदास जैन

वीरनिर्वाण सं० २४४९ विक्रम सं० १९८० ई० सन् १९२३

प्रथमावृत्ति २०००] [मूल्य १२ आना

प्रकाशक—

पण्डित भगवानदास जैन,

कलकत्ता।

२०१ हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में

मैनेजर—पण्डित काशीनाथ जैन,

द्वारा मुद्रित।

प्रस्तावना।

आज यह ज्योतिषसार :नामक ग्रन्थ पाठकोंके सामने उपस्थित करते हुए मुझे बड़ा ही आनन्द होता है। यों तो भारतीय प्राचीन ज्योतिष-साहित्य में फलादेश के भी कई छोटे मोटे ग्रन्थ विद्यमान है जिनमें अनेक प्रकट भी हो चुके हैं और हो भी रहे हैं। परन्तु यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं, यह ग्रन्थ अपने ढङ्गकी एक अनोखी चीज है, यह पाठकोंको आद्यन्त पढ़नेसे स्वयं ज्ञात होगा। ज्योतिषके फलित विषयसे संबन्ध रखनेवाली प्रायः सभी बातोंका इसमें संक्षेप में किन्तु सुचारुरूप से समावेश किया गया है।

मुझे खेद है कि इस ग्रन्थके प्रणेताके संबन्धमें कुछ भी ऐतिहासिक प्रकाश नहीं डाल सकता,क्योंकि ग्रन्थकारने स्वयं न अपने नामका ही कहीं पर स्पष्टरूप से उल्लेख किया है और न तो ग्रंथ-रचनाके समय का ही निर्देश किया है। हां, मंगलाचरण देखनेसे यह बात निर्विवाद है कि ग्रंथकर्त्ता जैन थे और ज्योतिष विषयका उनका ज्ञान असाधारण था।

ग्रन्थके अन्तमें 'प्रथम प्रकीर्णकं समाप्तम्' यह लिखा है, इससे यह स्पष्ट होता है कि इस ग्रन्थके और भी प्रकरण होंगे, परंतु बहुत खोज करने पर भी मैं सम्पूर्ण ग्रन्थको प्राप्त नहीं कर सका हूं, इसलिये मैं लाचार हूं। इस प्रथम प्रकीर्णकी सिर्फ एक ही प्रति अहमदाबाद निवासी श्रीयुत वकील केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी *B. A. L. L. B.* द्वारा मुझे प्राप्त हुई थी, इसलिये मैं उनका कृतज्ञ हूं।

मूल ग्रन्थकी भाषा प्राकृत होनेसे इसका हिंदी अनुवाद भी कर दिया गया है, जिससे सर्व साधारणको इसे समझनेमें सुगमता हो।

आशा है कि ज्योतिषके प्रेमी-गण इस ग्रन्थको अपनाकर मेरे परिश्रम को सफल करेंगे और अनुवादकी त्रुटियों पर ख्याल न देकर सज्जनता का परिचय देंगे।

कलकत्ता। } भगवानदास जैन
ता० ५-७-१९२३

यानुक्रमणिका ।

विषय	पृष्ठांक
इष्टदेवको नमस्कार	१
द्वार गाथा	१
शुभाशुभ तिथि	३
तिथिके नाम	३
वर्जनीय तिथि	४
रविदग्धा तिथि	४
चन्द्रदग्धा तिथि	५
क्रूर तिथि	६
क्रूर तिथि यन्त्र स्थापना	७
सातवारके नाम	८
कौन कार्यमें कौन ग्रह सबल है	८
वारका आरंभ	६
वारके शुभ चौघड़ियाँ	६
कालहोरा	१०
दिनहोरायन्त्र	११
रात्रोहोरायन्त्र	११
सिद्धछायालग्न	१२
अभिजितलग्न	१३
नक्षत्रकेनाम	१४
नक्षत्रके ताराकी संख्या ...	१५
नक्षत्र संज्ञा	१६
दिनयोग	१७
योग की दुष्ट घड़ी	१७
होडाचक्र	१८
बारह राशिके नाम	१६
नक्षत्रके चरणसे राशिविचार	१६
राशिकार्य	२०
जन्मनक्षत्र फल	२१
लघु दिन शुद्धि	२१
बड़ीदिन शुद्धि	२२
२८ उपयोगके नाम	२२
उपयोगके फल	२२
पुरुष नव वाहनफल	२४
प्रकारान्तरे १२ वाहन	२५
स्वरज्ञान	
चन्द्रनाडी फल	२५
सूर्यनाडी फल	२५
स्वरदिशाशूल	२६
स्वर द्वारा गर्भज्ञान	२६
स्वरद्वारा ऋतुदान	२६
स्वरफल	२७
वत्सचक्र	२८
शिवचक्र	२८
तत्काल योगिनी स्थापना...	२६
मासराहु फल	३०
वारराहु फल	३१
अर्द्ध प्रहरी राहुफल	३१
शुक्रफल	३२

विषय	पृष्ठांक
कीलक फल ……	३४
परीघदंड ……	३४
परीघमाहात्म्य ……	३५
पंचक फल ……	३५
त्रिविध दिशाशूल ……	३६
नक्षत्र दिशाशूल ……	३७
वारदिशाशूल ……	३७
विदिशाशूल ……	३७
दिशाशूल परिहार ……	३८
रविवासा ……	३८
दिशा विदिशामें रवि प्रहर …	३९
रवि फल ……	३९
वत्स रवि राहु फल ……	४०
स्थिर योग ……	४०
सर्वाङ्क योग ……	४१
रवि योग ……	४२
राज योग ……	४२
कुमार योग ……	४३
ज्वालामुखी योग ……	४३
अशुभ योग ……	४४
शुभ योग ……	४४
त्रिकशुद्धि योग ……	४४
तिथि वार नक्षत्र अशुभयोग	४६
अमृत सिद्धि योग ……	४८

विषय	पृष्ठांक
अर्द्ध प्रहरयोग ……	४९
कालवेलायोग ……	४९
कुलिकयोग ……	५०
उपकुलिकयोग ……	५०
कंटकयोग ……	५०
कर्कटयोग ……	५१
यमघंटयोग ……	५१
उत्पातयोग ……	५२
वार नक्षत्र मृत्युयोग ……	५२
तिथिवार मृत्युयोग ……	५३
कायायोग ……	५४
वार नक्षत्र सिद्धियोग ……	५४
तिथिवार सिद्धियोग ……	५४
त्रिपुष्करयोग ……	५५
संवर्तकयोग ……	५५
शूलयोग ……	५६
शत्रु योग ……	५६
भस्म और दण्ड योग ……	५६
कालमुखीयोग ……	५७
वज्रमुसल योग याने ग्रह जन्म नक्षत्र ……	५७
व्रतादि लेनेका मुहूर्त ……	५८
क्षौर कर्म मुहूर्त ……	५९
भद्राफल ……	५९

विषय		पृष्ठांक	विषय		पृष्ठांक
६० घड़ीमें भद्राके अंगविभाग		६०	बुधशुभाशुभ	......	७२
भद्रावास	......	६१	गुरु शुभाशुभ	......	७२
संमुखी भद्रा विचार	......	६२	शुक्र शुभाशुभ	......	७२
कुंभचक्र	......	६३	शनि शुभाशुभ	......	७३
यमदंष्ट्रायोग	......	६४	राहुकेतु शुभाशुभ	......	७३
चर योग	......	६४	नवग्रह राशि प्रमाण	......	७३
तिथिकाल पाश	......	६५	नवग्रहके नवमांश	......	७४
वारकाल पाश	......	६५	ग्रह फल	......	७५
छींक विचार	......	६५	पंचग्रहवक्री तथा अतिचार के दिन संख्या	......	७५
विजय मुहूर्त	......	६६	रविवासचक्र	......	७६
प्रस्थान मुहूर्त्त	......	६७	चंद्रवासचक्र	......	७७
प्रस्थान निषेध	......	६७	भौमवासचक्र	......	७७
मध्यम प्रस्थान	......	६८	बुधवासचक्र	......	७८
उत्तम प्रस्थान	......	६८	गुरुवासचक्र	......	७९
ताराबल	......	६९	शुक्रवासचक्र	......	७९
ताराके नाम	......	७०	शनिवासचक्र	......	८०
रवि शुभाशुभ	......	७०	शनिदृष्टि तिथि	......	८१
चंद्र शुभाशुभ	......	७०	राहुकेतु वास चक्र	......	८१
चन्द्रवास फल	......	७१	चन्द्रावस्था	......	८२
भौम शुभाशुभ	......	७२			

जैनाचार्य प्रणीत ज्योतिष की प्राचीन पुस्तकें।

(हिन्दी अनुवाद समेत छपेगी)

१ गणितसार संग्रह—श्री महावीराचार्य प्रणीत गणितशास्त्रका अपूर्वग्रन्थ।

२ मेघमहोदय (वर्ष प्रबोध)— महामहोपाध्याय श्री मेघविजयगणि प्रणीत फलादेश का अत्युत्तम ग्रंथ।

३ त्रैलोक्य प्रकाश— प्रतिभा सर्वज्ञ श्री देवेन्द्रसूरिके शिष्य श्रीहेमप्रभसूरि प्रणीत ताजिक प्रश्नका बड़ा चमत्कारी ग्रन्थ।

॥ ऐं नमः श्रीजिनवराय ॥

अथ श्री ज्योतिषसारः प्रारभ्यते ।

श्रीमदर्हत्प्रभुं नत्वा, केवलज्ञानभास्करम् ।
कुर्वे ज्योतिषसाराख्य, भाषां बालावबोधिकाम् ॥ १ ॥

ग्रन्थकार अपने इष्टदेव को नमस्कार करते हैं ।

पण परमिट्ठ णमेयं, समरिय सुहगुरुं य सरस्सई सहियं ।
कहियं जोइसहीरं, गाथा—छंदेण बंधेण ॥ १ ॥

भावार्थ—श्री पंच परमेष्ठी (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य्य, उपाध्याय और सर्व साधु) को नमस्कार करके और सरस्वती के साथ सद्गुरु का भी स्मरण करके गाथा बंध छंद से ज्योतिषहीर (ज्योतिषसार) का मैं कहता हूँ ॥ १ ॥

द्वार गाथा कहते है—

तिहि वार रिक्ख जोगं, होडाचक्कम्मि रासि दिणसुद्धी ।
वाहण हंसो वच्छो, सिवचक्कं जोगिणी राहो ॥ २ ॥
भिगु कील परिघ पंचग, सूलं रविचारु थिवर सव्वंकं ।
रवि राज कुमार जाला, सुभ असुभं जोग अमियाय ॥ ३ ॥

अधपुहर कालवेलं, कुलकं अवकुलकं कंटकं जोगं।
कक्कड यमघंटा यं, उप्पाय मिच्च काण सिद्धं ॥ ४ ॥
खंजो यमल संवत्त, सूलं सत्तू य भसम दंडायं।
कालमुही वज्जमुसलं, भद्दा कुंभोइ जिमदाढं ॥ ५ ॥
चरजोग कालपासं, छीया विजया य गमन तारबलं।
गह सिसिवत्था गुणसट्ठि, भणियं बोले हिं अणुक्कमसो ॥६॥

भावार्थ—तिथि १, वार २, नक्षत्र ३, योग ४, होडाचक्र ५, राशि ६, दिनशुद्धि ७, वाहन ८, हंस ९, वत्स १०, शिवचक्र ११, योगिणी १२, राहु १३, भृगु १४, कीलक १५, परीघ १६, पंचक १७, शूल १८, रविचार १९, स्थिर योग २०, सर्वांक योग २१, रवियोग २२, राजयोग २३, कुमारयोग २४, ज्वालामुखीयोग २५, शुभयोग २६, अशुभयोग २७, अमृतादियोग २८, अर्द्धपहर २९, कालवेला ३०, कुलिक ३१, उपकुलिक ३२, कंटकयोग ३३, कर्कटयोग ३४, यमघंटयोग ३५, उत्पातयोग ३६, मृत्युयोग ३७, काणयोग ३८, सिद्धियोग ३९, खंजयोग ४०, यमलयोग ४१, संवर्त्तकयोग ४२, शूलयोग ४३, शत्रुयोग ४४, भस्मयोग ४५, दंडयोग ४६, कालमुखीयोग ४७, वज्रमूसलयोग ४८, भद्राफल ४९, कुंभचक्र ५०, यमदाढचक्र ५१, चरयोग ५२, कालपाश ५३, छींकफल ५४, विजयमुहूर्त्त ५५, गमनफल ५६, ताराबल, ५७, नवग्रहचक्र ५८, चन्द्रावस्था ५९ इत्यादि गुनसठ द्वार अनुक्रम से कहते हैं ॥ २—३—४—५—६ ॥

———

तिथि द्वार—

शुभाशुभ तिथि कहते हैं—

पक्खे पडिवा सिट्ठं, बीया सिट्ठी तीयाइ खेमाय ।
चउत्थी य धणं खीया, पंचमी सेया असुह छट्ठी ॥ ७ ॥
सुहदाइया सत्तमि, अट्ठमि वाही नवमि या मिच्चं ।
दसमि ग्गारिसि लाहो, जीवो संसाइ बारसी या ॥ ८ ॥
सव्वसुहा तेरसिया, उज्जल अह किण्ह वज्जि चवदिसिया ।
पुन्निम अमावसिया, गमणं परिहरिय सयकज्जं ॥ ९ ॥

भावार्थ—पक्षमें एकम श्रेष्ठ, दूज श्रेष्ठ, तीज कल्याणकारी, चौथ धनका नाश कारक, पांचम श्रेष्ठ, छट्ठ अशुभ, सातम सुखदायक, आठम व्याधिकारक, नवम मृत्युदायक, दशम ग्यारस लाभ कारक, बारस प्राण संदेह कारक, तेरस सुखकारी, चौदस पूर्णिमा और अमावास्या गमन में और सभी शुभकार्यों में वर्जनीय हैं। ये कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष दोनों पक्ष के तिथियों का फल जानना ॥ ७—८—९ ॥

तिथि के नाम—

नंदाइ छट्ठि गारिसि, भद्दा बिय सत्तमि य बारिसिया ।
तिय अट्ठमि तेरसि जया, रित्ता चउ नवमि चवदिसिया ॥१०
पंचमि दसमि य पुन्निम, पुन्ना पण नाम जोग अजोगं ।
तिहि सुद्धी सवि सुद्धं, भणिया विबुहाइ जोइसियं ॥ ११ ॥

भावार्थ—एकम छट्ठ और ग्यारस नंदा तिथि है, दूज सातम

और बारस भद्रातिथि है, तीज आठम और तेरस जया तिथि है, चौथ नवम और चौदश रिक्ता तिथि है, पांचम दशम और पूनम पूर्णातिथि है। ये पांच तिथि के नाम हैं इसका शुभाशुभ विचार करना, तिथि शुद्ध होने से बाकी सर्व शुद्ध होते हैं ऐसे विद्वान ज्योतिषी कहते हैं ॥ १०—११ ॥

सब शुभकार्य में वर्जनीय तिथि—

रित्ता छट्ठि अमावसि, अट्ठमि बारसि य दद्ध कूराए।
तिय वार फरस तिहि, ते सव्वे वज्जिय सुहकम्मे ॥ १२ ॥

भावार्थ—रिक्ता तिथि (४ ९-१४), छठ, अमावास्या, आठम, बारस, दग्धातिथि, क्रूरतिथि और तीन वार स्पर्शी तिथि ये सभी शुभकार्योंमें वर्जनीय हैं ॥ १२ ॥

रविदग्धा तिथि—

बीयाइ मीन धण रवि, चउत्थी तिहि भाणु वसह कुंभाए।
छट्ठी य मेस करकं, अट्ठमि कन्नाइ मिहु हि ॥ १३ ॥
दसमीइ विच्छि सिंहो, बारसि अक्के य तुले मकरे यं।
रवि दद्धा तिहि एए, वज्जेयं सव्व सुह कज्जायं ॥ १४ ॥

भावार्थ—धन और मीन का सूर्य्य हो तो दूज, वृष और कुंभ का रवि हो तो चौथ, मेष और कर्क का रवि हो तो छठ, कन्या और मिथुन का रवि हो तो आठम, सिंह और वृश्चिक का रवि हो तो दशम, तुला और मकर का रवि हो तो बारस, इन छ तिथि को रविदग्धा तिथि कहते हैं ये सभी शुभकार्यों में वर्जनीय हैं ॥ १३=१४ ॥

रविदग्धा तिथिः

धनुर्मीने	२	मिथुनकन्ये	८
वृषकुंभे	४	सिंह वृश्चिके	१०
मेष कर्के	६	तुला मकरे	१२

चन्द्रदग्धा तिथि—

कुंभ धणे ससि बीया, मेषे मिथुने हिं चंद चउत्थीया।
सिंह तुले हि छट्ठी, मीने मकरे हिं अट्ठमिया॥ १५॥
करके विस ससि दसमी, विच्छि कन्नाइ बारसी तिहिया।
कज्जे य सव्वे वज्जं, ससिदड्ढा एहि सड तिहिया॥ १६॥

भावार्थ—धन और कुंभका चंद्रमा हो तो दूज, मेष और मिथुनका चन्द्रमा हो तो चौथ, सिंह और तुला का चन्द्रमा हो तो छट्ठ, मीन और मकर का चन्द्रमा हो तो आठम, कर्क और वृषका चंद्रमा हो तो दशम, वृश्चिक और कन्या का चन्द्रमा हो तो बारस, इन छ तिथियों को चन्द्रदग्धा तिथि कहते है ये सभी शुभकार्योंमें वर्जनीय है॥ १५-१६॥

चन्द्रदग्धा तिथिः।

कुंभधनुषि	२	मकरमीने	८
मेष मिथुने	४	वृषकर्के	१०
तुलसिंहे	६	वृश्चिककन्ये	१२

क्रूर तिथि—

मेस रवि पडिवा तिहि, पंचमि पढमोइ पाय कूरायं।
वसहे रवि तिहि बीया, दुगपायं पंचमी कूरं ॥ १७॥
मिहुणे हि अरकि तीया, पंचमी तियपाय कूर भणिए हिं।
करके अरके चउत्थो, कूरो चउपाइ पंचमियं॥ १८॥
सिंहे छट्ठो भणियं, दसमी धुरिपाइ कूर उग्गे हिं।
कन्नाइ तिही सत्तमि, पाइदुगं दसमि रुद्द गणिए हिं॥ १९॥
तुल संकंते अट्ठमि, तियपायं दसमि रुद्दवहिए हिं।
अलि संकंते नवमी, अंतो पय दसमि भयभीया॥ २०॥
धण सूरो इगारसि, पुन्निम इगपाय वज्जि सव्व कज्जे।
मकरे सूरो बारसि, पुन्निम दुयपाय वज्जे हिं॥ २१॥
कुंभोइ भाणु तेरसि, तिय पायं पुन्निमी य परिवज्जे।
मीणोइ भाण चवदिसि, चउरो पय वज्जि पुन्निमी या॥ २२॥

भावार्थ—जो मेषादि बारह राशि है उसका चार चार के तीन भाग (मेषादि सिंहादि और धनादि) होते हैं उस प्रत्येक भागको चतुष्क कहते है और चतुष्कके चौथे भागको पाद कहते है। मेषादि प्रथम चतुष्कके प्रथम पाद मेषका रवि हो तो पडिवा और पंचमी, दूसरा पाद वृषका रवि हो तो दूज और पांचम, तिसरा पाद मिथुन का रवि हो तो तीज और पांचम, चौथा पाद कर्कका रवि हो तो चौथ और पांचम। सिंहादि दूजा चतुष्कके प्रथम पाद सिंहका रवि हो तो छट्ठ और दशम, दूसरा पाद कन्या का

रवि हो तो सातम और दशम, तीसरा पाद तुलाका रवि हो तो आठम और दशम, चौथा पाद वृश्चिक का रवि हो तो नवमी और दशमी। धनादि तीजा चतुष्क के प्रथम पाद धनका रवि हो तो इग्यारस और पूनम, दूसरा पाद मकर का रवि हो तो बारस और पूनम, तीसरा पाद कुंभका रवि हो तो तेरस और पूनम, चौथा पाद मीनका रवि हो तो चौदश और पूनम ये सभी क्रूर तिथि हैं ॥ १७ से २२ । *

पाठान्तरे क्रूर तिथि यंत्र रचना—

पंचमि दसमि य पुन्निम, वज्जिय तिहि वार बार संकंति।
मेषाई पडिवाई, कूरा वज्जे य सुह कज्जे ॥ १ ॥
पंचमि चउभागे हिं, ठवियं संकंति मेस अरकाई।
तह दसमि सिंह विच्छिय, पुन्निम चउभाग धण मीणं ॥ २ ॥

भावार्थ—पांचम दशम और पूनम को छोडकर बाकी की बारह तिथि अनुक्रमसे बारह संक्रान्तिमें स्थापन करो और मेष से कर्क तक इन चारमें पांचम, सिंहसे वृश्चिक तक इन चारमें दशम, और धनसे मीन तक इन चारमें पूनम स्थापन करो देखो यंत्रमें। ये सभी क्रूर तिथि है वे सभी शुभकार्योंमें वर्जनीय है।१-२।

मेषादि क्रूर तिथि यंत्र स्थापना—

मेष	...	१-५	सिंह	...	६-१०	धन	...	११-१५

नोट--*आरंभ सिद्धिमें प्रथम विमर्श के श्लो० ८ में कहा है कि मेषादि राशि क्रूर वारमें लगी हो तो उक्त तिथि क्रूर होती है।

वृष	...	२-५	कन्या	...	७-१०	मकर	...	११-१५
मिथुन	...	३-५	तुला	...	८-१०	कुंभ	...	१३-१५
कर्क	...	४-५	वृश्चिक	...	६-१०	मीन	...	१४-१५

अथ वार द्वार॥

सात वार के नाम—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
वार-रवि सोम मंगल, बुध गुरु सुकेइ थावर प्पमाणं।
सोमा-ससि बुध गुरु भिगु, कूरा-रवि मंद भोमाई॥ २३॥

भावार्थ—रविवार, सोमवार, मंगल वार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार ये सात वार है, इसमें सोम, बुध, गुरु, और शुक्र, ये चार वार सौम्य (शुभ) है, रवि, मंगल और शनि ये तीन वार क्रूर (अशुभ) है॥ २३॥

कौन कार्यमें कौन ग्रह सबलहै—

गमणं भिगु बुध नाणं, निवमिलणं सूर गुरु य वीवाहे।
शनि थाघनू युद्ध भौमे, ससिबल सव्वे हि कज्जे हिं॥२४॥
न हु वारदोस रयणी, विसेस भूमेहि' मंदवारे हि'।
'सनि सुत्त भूम भुत्तं,' सुहदाई सयल कज्जे हि'॥ २५॥

भावार्थ—गमन (प्रयाण) में शुक्रका बल, विद्याभ्यासमें बुधका बल, राजाआदिकी मुलाकात में सूर्यका बल, विवाह में गुरुका बल, दीक्षामें शनिका बल, युद्धमें मंगलका बल, और सर्व

कार्यमें चंद्रमाका बल देखना। रात्रिके विषे वार का दोष नहीं है और मंगलवार शनिवार को तो विशेष करके दोष नहीं।

वारका आरम्भ—

संकन्ति कुंभविच्छी, मीने मेसे हिं संझवारे हिं।
करके तुल धन वसहे, वारं निसि मज्झि लग्गे थं ॥ २६ ॥
सूरे उग्गे वारं, कन्ना मकरे हिं मिथुन सिंहे यं।
संकंति वार तिहुवरी, लग्गं तिय जोइसं हीरं ॥ २७ ॥

भावार्थ-कुंभ मीन मेष और वृश्चिक की संक्रांतिमें सन्ध्या समय से वार लगे, कर्क तुला धन और वृष की संक्रांतिमें अर्द्धरात्रि से वार लगे, और कन्या मकर मिथुन और सिंह की संक्रांतिमें दिन उदय से वार लगे॥

सातवारमें शुभ चौघडीया कहते है—

सग वारे चउघडिया, उत्तम आइच्च एग बिय सडे।
ससि इग पण अट्ठे हिं, मंगल चउ सत्त अड लहियं॥ २८ ॥
बुद्धोइ तीय सड अड, सुरगुरु बीओइ पंच सत्तमियं।
भिगु इगु चउ सड अट्ठम, ती पण सग अट्ठ रविपुत्तो ॥ २९ ॥

भावार्थ--रविवार को पहिला दूजा और छट्ठा, सोमावारको पहिला पाँचवाँ और आठवाँ, मंगलवार को चौथा सातवाँ और आठवाँ, बुधवारको तीजा छट्ठा और आठवाँ, गुरुवारको दूजा पाँचवाँ और सातवाँ, शुक्र वारको पहिला चौथा छट्ठा और आठवाँ शनिवारको तीजा पाँचवाँ सातवाँ और आठवाँ चौघडीया शुभ है॥

शुभ चौघडिया यंत्र

रवि	१	२	६		उत्तम
सोम	१	५	८		,,
मंगल	४	७	८		,,
बुध	३	६	८		,,
गुरु	२	५	७		,,
शुक्र	१	४	६	८	,,
शनि	३	५	७	८	,,

कालहोरा कहते है—

होराइ रवि उद्वेगं, सोम अमी भूम रोग बुध लाहं ।
गुरु सुभ भिगु चलयं, थावर कल होइ दिण उग्गे ॥ ३० ॥
निसि सूर सुभो चल सिसि, कुज कलहि बुध उद्वेग गुरु अमियं।
भिगु रोग लाभ थावर, रयण पणं गिणे दिणे छट्ठ ॥ ३१ ॥

भावार्थ—सूर्योदयसे सात वार की आद्य होरा—रविवार को उद्वेग, सोमवार को अमृत, मंगलवार को रोग, बुध वारको लाभ गुरुवार को शुभ, शुक्रवारको चल और शनिवारको कलह, होरा है ॥ रातकी शरूआतसे आद्य होरा-रविवारको शुभ, सोमवार को चल, मंगलवारको कलह, बुधवारको उद्वेग, गुरुवारको अमृत शुक्रवार को रोग और शनिवारको लाभ, होरा है ॥ ये अढाई अढाई घडीकी एक एक होरा होती है, उसमें आद्य होरा अपने अपने वारकी होती है । दिनमें जो वार हो उसकी ही आद्य होरा

होती है और दूसरी उससे छट्ठे वारकी तीसरी उससे भी छट्ठे वारकी इत्यादि समज लेना; रात्रिमें आद्य होरा तो अपने वारको ही होती है और दूसरी उससे पांचवें पांचवें वारकी होती है। विशेष यंत्र स्थापनासे देखो—

दिन होरा यंत्र

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०	च०	का०
२	च०	का०	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०
३	ला०	शु०	च०	का०	उ०	अ०	रो०
४	अ०	रो०	ला०	शु०	च०	का०	उ०
५	का०	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०	च०
६	शु०	च०	का०	उ०	अ०	रो०	ला०
७	रो०	ला०	शु०	च०	का०	उ०	अ०
८	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०	च०	का०
९	च०	का०	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०
१०	ला०	शु०	च०	का०	उ०	अ०	रो०
११	अ०	रो०	ला०	शु०	च०	का०	उ०
१२	का०	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०	च०

रात्री होरा यंत्र ।

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	शु०	च०	का०	उ०	अ०	रो०	ला०
२	अ०	रो०	ला०	शु०	च०	का०	उ०
३	च०	का०	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०

४	रो०	ला०	शु०	च०	का०	उ०	अ०
५	का०	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०	च०
६	ला०	शु०	च०	का०	उ०	अ०	रो०
७	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०	च०	का०
८.	शु०	च०	का०	उ०	अ०	रो०	ला०
९	अ०	रो०	ला०	शु०	च०	का०	उ०
१०	च०	का०	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०
११	रो०	ला०	शु०	च०	का०	उ०	अ०
१२	का०	उ०	अ०	रो०	ला०	शु०	च०

सिद्धछाया लग्न—

ससि सुक्क सनी साढं, अड पाया नव भूमे य अड बुद्धे।
रवि एगारस सग गुरु, तणु छाया मिण हु भूमि सुद्ध ॥ ३२ ॥

भावार्थ—सोमवार शुक्रवार और शनिवार को साढे आठ, मंगलवार को नव, बुधवारको आठ, रविवारको ग्यारह, गुरुवार को सात पाँव अपने शरीर की छाया हो तो उस समय शुभ लग्न जानना। इस छाया लग्नसे शुभ लग्नका अभावमें भी गमन प्रवेश प्रतिष्ठा दीक्षा आदि शुभ कार्य करना ऐसा विद्वानों का मत है ॥ आरम्भ सिद्धि आदि ग्रन्थों में कहा है कि—

"सुहग्गह लग्गा भावे, विरुद्ध दिवसेऽवि तुरिअ कज्जम्मि।
गमण पवेस पइट्ठा-दिक्खाई कुणासु इत्थ जओ ॥ १ ॥
एसं बुहे हिं कहियं, छाया लग्गं ध्रुवं सुहे कज्जे।
सुह सउण निमित्त बलं, जोइसु परं सुलग्गेऽवि ॥ २ ॥"

शुभग्रह लग्नके अभावमें, विरुद्ध दिवसमें, आवश्यकीय कार्य में गमन प्रवेश प्रतिष्ठा दीक्षा आदि शुभ कार्य करना, विद्वानोंने कहा है कि शुभ शकुन निमित्त और सुलग्नका अभावमें भी इस छाया लग्नमें निश्चयसे शुभ कार्य करना चाहिये पुनः नरपति जयचर्यामें भी कहा है—

"नक्षत्राणि तिथि वारास्तारा श्चन्द्रबलं ग्रहाः।
दुष्टान्यपि शुभं भावं भजन्ते सिद्धछायया ॥ १ ॥"

इत्यादि विशेष खुलासा 'आरम्भसिद्धि वार्त्तिक' में दिया है ॥

तनुपाद छायालग्न यंत्र—

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
११	८॥	९	८	७	८॥	८॥

अभिजित् लग्न—

तिण मिण हु बार अंगुल, छाया रवि वीस चंद सोलाणं।
भू पनर बुध चवदह, गुरु तेरह बार भिगु मंदे ॥ ३३ ॥
बे वार अभीय दिण महि, मासा अभीयाइ उसा चउत्थपयं।
सवणाइ घडी चार ही, लहियं करि कज्ज फल बहु यं ॥३४॥
घडियं ओणोसायं, अभीय भागाय करिय चउभाग'।
पउणो पण घडियायं, जम्मोत्तरक्खरे नामं ॥ ३५ ॥

भावार्थ—बारह अंगुलके शंकुकी छाया रविवारको वोश, सोमवार को सोलह, मंगलवारको पंद्रह, बुधवारको चौदह, गुरुवार को तेरह, शुक्रवार और शनिवार को बारह अंगुल की छाया हो तब शुभ कार्य करना। इस शंकुकी छाया को 'अभिजित छाया

कहते है, यह दिनमें दो वार आती है। मासमें एक वार उत्तरा-षाढा के अन्त्यका चौथा पाद और श्रवण के आदि की चार घडी एवं १६ घडी अभिजित् होता है उसमें शुभकार्य करनेसे बहुत फल दायक होता है। अभिजित् की उन्नीस घडीके चार भाग पौनी पांच पांच घडी के होते है। उसका जन्माक्षर नाम—जु जे जो खा, है ॥

सप्तवारे अभिजित् अंगुलछाया यंत्र—

	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
अं	२०	१६	१५	१४	१३	१२	१२

नक्षत्र के नाम—

अस्सनि भरणी कित्तग, रोहिणि मिग अद्द पुणव्वसं पुक्खं।
असलेसा य मघा यं, पुव्वा उत्तरफग्गुणियं ॥ ३६ ॥
हत्था य चित्त सायं, विसाह अणुराह जिट्ठ मूला यं।
पुव्वा उत्तरसाढा, अभीय सवणं धणिट्ठा यं ॥ ३७ ॥
सयभिसह पुव्वभद्दपद, उत्तरभद्द रेवई य अडवीसं।
निक्खत्ता अह तारा, कहियं जोइस पमाणम्मि ॥ ३८ ॥

भावार्थ—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तरा-षाढा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा, और रेवती ये नक्षत्र के नाम है।

नक्षत्रके तारा की संख्या—

अस्सणि तिय भरणी तिय, कित्तिग सड रोहिणी य पण तारा।
मिगसिर तिय अद्दा इग, पुणव्वसु चउरोइ पुक्ख तियं ॥३९॥
असलेसा य सड मघ पण, पुफा दो उफा दो य कर पण य।
चित्ता इग साई इग, विसाह अणुराह चउ चउरो ॥ ४० ॥
जिट्ठ तिय मूल इगदस, चउ चउ पुसा उसाइ तिय अभियं।
सवण तियं धणिट्ठा चउ, सियभिस सउ पूभ उभ दो दो ॥४१॥
रेवय बत्तीसाणं, तारा संख्याइ तिहि निसेयव्वो।
सियभिस दसमी नेया, रेवय बीया पमाणम्मि ॥ ४२ ॥

भावार्थ--अश्विनी नक्षत्रके तीन तारा, भरणी के तीन, कृत्तिकाके छ, रोहिणीके पांच, मृगशिर के तीन, आर्द्रा के एक, पुनर्वसु के चार, पुष्यके तीन, आश्लेषाके छ, मघाके पांच, पूर्वाफाल्गुनीके दो, उत्तराफाल्गुनी के दो, हस्ताके पांच, चित्राके एक, स्वाति के एक, विशाखाके चार, अणुराधा के चार, ज्येष्ठाके तीन, मूलके ग्यारह, पूर्वाषाढा के चार, उत्तराषाढाके चार, अभिजित् के तीन, श्रवणके तीन, धनिष्ठाके चार, शतभिषक् के सो, पूर्वाभाद्रपदाके दो, उत्तरा भाद्रपदाके दो, और रेवतीके बत्तीस तारा है ॥ इनका प्रयोजन यह है कि जिस नक्षत्रके जितने तारा है उसके बराबर की तिथि अशुभ जानना, जैसे—अश्विनी के तीन तारा है तो अश्विनीको तृतीया अशुभ, कृत्तिके छ तारा है तो कृतिका को छट्ठ अशुभ, शतभिषक के सो तारा है तो उसको पंदरहसे भाग देनेसे शेष

१० बचे सो शतभिषा को दशमी अशुभ, रेवती के बत्तीस तारा है तो उसको भी पंद्रहसे भागदेने से शेष २ बचे सो रेवती को दूज अशुभ; इस मुआफिक सर्वत्र समज लेना चाहिये ॥

नक्षत्र संज्ञा—

चर चल य पंच कहियं, साई पुणव्वसु य तीय सवणाई।
कूरा उग्गा पण रिक्ख, मघ भरणी तिन्नि पुव्वा यं ॥४३॥
थिर ध्रुव य चउ भणियं, रोहिणि पगाइ उत्तरा तिण्णं।
दारुण तिण्हं चउरो, मूलं असलेस जिट्ठ द्दा ॥ ४४ ॥
लहु खिप्प चउ रिक्खं, पुक्खा हत्था य अस्सणि अभीयं।
मिहुमित्त चउ रिसि यं, रेवय मिग चित्त अणुराहा ॥ ४५ ॥
मिस्सो साहारण दुग, विसाह कित्तिय अह फलं कहियं।
रिसियाइ जे य कम्मं, नामं सरिसाइ कारेयं ॥ ४६ ॥
गमणं चर लहु कीरइ, संतिं कीरेइ उग्ग थिर मित्तं।
वाही छेयी तिण्हं, मिस्सो साहारणं कम्मं ॥ ४७ ॥

भावार्थ—स्वाति पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा और शतभिषा ये पांच नक्षत्रोंको चर और चल संज्ञक कहते है। मघा भरणी और तीनों पूर्वा ये पांच नक्षत्रों को क्रूर और उग्र संज्ञक कहते है। रोहिणी और तीनों उत्तरा ये चार नक्षत्रों को स्थिर और ध्रुव संज्ञक कहते हैं। मूल आश्लेषा ज्येष्ठा और आर्द्रा ये चार नक्षत्रों को दारूण और तीक्ष्ण संज्ञक कहते हैं। पुष्य हस्ता अश्विनी और अभिजित् ये चार नक्षत्रों को लघु और क्षिप्र संज्ञक है। रेवती

मृगशिर चित्रा और अनुराधा ये चार नक्षत्र को मृदु और मित्र संज्ञक कहते है। विशाखा और कृत्तिका ये दोनों नक्षत्र को मिश्र और साधारण संज्ञक कहते है।। उसका फल-जैसे नक्षत्र के नाम है ऐसे कार्य करना; चरसंज्ञक और लघुसंज्ञक नक्षत्रोंमें प्रयाण विद्यारंभ आदि कार्य करना; उग्र स्थिर और मित्र संज्ञक नक्षत्रोंमें मंगलिक अभिषेक आराम आदि शांतिक कार्य करना (किसीमें उग्र संज्ञक नक्षत्रमें वध बंधन शस्त्र बनाना अग्नि आदि-के क्रूर कर्म करना ऐसे कहते हैं)। तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्रोंमें व्याधि प्रतीकार के कार्य करना। मिश्र संज्ञक नक्षत्रमें साधा-रण कार्य करना।। ४३ से ४७॥

दिन योग—

विक्खंभ पीय अक्खय, सोभागं सोभने हि अतिगंडं।
सोकम्मं धिति सूलं, गंडो विद्धो धुवो वाघा ॥ ४८ ॥
हरसण वज्जो सिद्धो, वितिपातं विरिह परिघ सिव सिद्धं।
साद्ध सुभो सुकलो, बम्हा इंदं च विधिति य ॥ ४९ ॥

भावार्थ—विष्कंभ,प्रीति, अक्षत (आयुष्यमान्),सौभाग्य,शोभन, अतिगंड, सुकर्मा, धृति, शूल, गंड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतिपात, वरियान, परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य शुभ, शुक्र, ब्रह्मा, ऐन्द्र और वैधृति ये २७ योग हैं॥ ४८। ४९ ॥

योग की दुष्टघडी—

सव्वे हिं वेधिती हिं, सव्वे वितिपात परिघ अद्धो हिं।

वज्जोयं नव घडियं, वाघाय नव घडिय परिमाणं ॥५०॥

सूलोइ सत्त घडियं, गंडो अतिगंज छप घडियाइं।

पंचेवइ विक्खंभं, सव्वे कज्जे विवज्जे हिं॥ ५१॥

भावार्थ—वैधृति और व्यतिपात पूर्ण वर्जनीय है, परीघ पहिलेसे आधा, वज्र और व्याघात की पहिलेसे नव नव घड़ी, शूल योग की सात घड़ी, गंड और अतिगंड की छ छ घड़ी, और विष्कंभ की पांच घड़ी, ये सब शुभकार्य में वर्जनीय हैं ॥५० ५१॥

होडा चक्रम्—

चुचेचोला अस्सणी, लीलूलेलो भरणि बीय विक्खायं।

आईऊए किंत्तिग, ओवावीवू रोहिणी चउरो ॥ ५२॥

वेवोकाकी मिगसिर, कूघङछ अद्दाइ छट्ठ रिसियायं।

केकोहाही पुणव्वसु, हुहेहोडा य पुक्खायं॥ ५३॥

डीडूडेडो असलेसा, मामीमूमे मघ दसम संयुत्तं।

मोटाटीटू पूव्वफग्गुणी, टेटोपापी य उत्तराफग्गुणी ॥ ५४॥

पूसणठ हत्थ तेरम, पेपोरारी चित्त चवदमं भणियं

रूरेरोता सायं, तीतूतेतो विसाहा यं ॥ ५५॥

नानीनूने अनुराहा, नोयायीयू जिट्ठ दसम अड उवरिं।

येयोभाभी मूलं, भूधाफढा पुव्वसाढा यं ॥ ५७॥

भेभोजाजी उसाढा, जूजेजोखा अभीय बावीसं।

खीखूखेखो सवणं, गागीगूगे धणिट्ठा यं॥ ५७॥

गोसासीसु सियभिस, सेसोदादी पूव्वभद्द लहियं।

दूथझञ उत्तरभद्दपद, देदोचाची रेवई कहियं ॥ ५८ ॥

भावार्थ—हरेक नक्षत्रके चार चार चरण है, जैसे-चूचेचोला ये चार चरण अश्विनी नक्षत्र के हैं, लीलूलेलो ये चार चरण भरणी नक्षत्र के हैं, इस मुआफिक हरेकके चार चार चरण स्पष्ट हैं ॥

बारह राशिके नाम—

मेस विस मिहुन करकं, सिंहो कन्नाइ तुला विच्छी य ।
धन मकर कुंभ मीनं, बारस रासी अणुक्कमसो ॥ ५६ ॥

भावार्थ—मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धन मकर कुंभ और मीन ये बारह राशि हैं ॥ ५६ ॥

नक्षत्रके चरण से राशि विचार—

अश्विनी भरणीकृत्तिकापादे मेषः ॥ १ ॥ कृत्तिकानां त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोऽर्द्धं वृषः ॥ २ ॥ मृगशिरोऽर्द्धमार्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनं ॥ ३ ॥ पुनर्वसुपादमेकं पुष्याश्लेषान्तं कर्कः ॥ ४ ॥ मघा च पुर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनीपादे सिंहः ॥ ५ ॥ उत्तराणां त्रयः पादा हस्तश्चित्रार्द्धं कन्या ॥ ५ ॥ चित्रार्द्धं स्वातिविसाखापादत्रयं तुला ॥ ७ ॥ विसाखापादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ॥८॥ मूलं च पूर्वाषाढा उत्तराषाढपादे धनुः ॥ ६ ॥ उत्तराणां त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरः ॥ १० धनिष्ठार्द्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपादत्रयं कुंभः ॥ ११ ॥ पुर्वाभाद्रपादमेकमुत्तराभाद्रपद रेवत्यन्तं मीनः ॥ १२ ॥

भावार्थ—अश्विनी भरणी और कृत्तिकाके एक पाद (चरण) का मेष राशि १। कृत्तिका के तीन पाद रोहणी और मृगशिर के दो पाद का वृषराशि २। मृगशिर के दो पाद आर्द्रा और पुनर्वसु के तीन पाद का मिथुनराशि ३। पुनर्वसु के एक पाद पुष्य और आश्लेषा का कर्कराशि ४। मघा पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी के एक पाद का सिंहराशि ५। उत्तराफाल्गुनी के तीन पाद हस्त और चित्रा के दो पाद का कन्याराशि ६। चित्रा के दो पाद स्वाति और विशाखा के तीन पाद का तुलाराशि ७। विशाखा के एक पाद, अनुराधा और ज्येष्ठाका वृश्चिकराशि ८। मूल पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा के एक पाद का धनराशि ९। उत्तराषाढा के तीन पाद श्रवण और धनिष्ठा के दो पाद का मकरराशि १०। धनिष्ठा के दो पाद शतभिषा और पूर्वाभाद्रपदा के तीन पाद का कुंभ राशि ११। पूर्वाभाद्रपद का एक पाद उत्तराभाद्रपद और रेवती का मीन राशि १२ होते हैं ॥

राशिकार्य—

गिह गाम खलय करसणि, विवाय निवमिलण नामिरासीणं।
विवाहे गहगोचरे, जम्मो रासीणं मंगलं ॥ ६० ॥

भावार्थ—गृहकार्य, नगर प्रवेश, खला बनाना (खेतमेंसे धान्य काट कर जिस जमीन पर इकट्ठा करते है वह) और राजा की मुलाकात, इत्यादिकमें नाम राशि प्रशस्त है विवाह ग्रहगोचर आदिकमें जन्मराशि प्रशस्त है ॥ ६० ॥

जन्म नक्षत्र फल—

जम्म रिक्ख ससि पसत्थं, सव्वे कम्मे हिं मंगलायारे ।
अपसत्थ पौर भेसजं, विवाय वाएसु गमणेसु ॥ ६१ ॥

भावार्थ—जन्म के नक्षत्र और चंद्रमा सब मांगलिक कार्य में प्रशस्त हैं और नगर संबंधि कार्य औषध विवाद यात्रा (गमन) इत्यादिकमें अप्रशस्त हैं ॥ ६१ ॥

लघुदिन शुद्धिः—

चित्ताइ मास उभयं, अहिया दिण मेलि भाग सग देयं ।
दिण नाम सग विचारियं, सिरियं १ कलहे २ य आणंदं ३ ॥ ६२ ॥
मिय ४ धम्म ५ तपस ६ विजयं ७, सिरियं धन लाहु कलह जुद्धेयं ।
आणंदणंदकारी, मियउ मिच्चाई य होइ ॥ ६३ ॥
धम्मोइ धम्मभावं, तपसो समभावं विजय रिउनासं ।
दिण सुद्धी लहु एयं, नेया सव्वे हिं कज्जे हिं ॥ ६४ ॥

भावार्थ—चैत्रादि गत मासको द्विगुणा करना, उसमें वर्त्त-मान मास के गत दिन मिलाकर सातका भाग देना जो शेष बचे उसका अनुक्रमसे सात नाम--श्री १ कलह २ आणंद ३ मृत्यु ४ धर्म ५ तपस ६ विजय ७ । इनका फल—श्री-धनका लाभकारक, कलह-युद्धकारक, आणंद-आणंदकारक, मृत्यु-मृत्युकारक, धर्म धर्मभावकारक, तपस्—समभावकारक, विजय—शत्रुनाश कारक होते है ॥ ६२ से ६४ ॥

बड़ी दिन शुद्धिः-

रवि अस्सणि ससि मिगसिर, भूमे असलेस बुद्ध हत्थायं।
सुरगुरु अणुराहायं, भिगु उसा सनि सतभिसयं ॥ ६५॥
एए हिं वार रिक्खा, अडवीस पंद नाम उवजोगा।
नामं सरिसा य फलं, कहियं अणुक्कम हि नामे हिं ॥ ६६ ॥

भावार्थ—रविवार को अश्विनी से, सोमवारको मृगशीर्ष से, मंगलवारको आश्लेषा से, बुधवार को हस्त से, गुरुवार को अनुराधा से, शुक्रवार कोउ त्तराषाढ़ा से और शनिवारको शतभिषा से गिणने से ये २८ उपयोग होते हैं उसके नाम सदृश फल कहना।

२८ उपयोग के नाम--

आणंद कालदंडं, परिजा सुभ सोम धंस धज वच्छो।
वज्जो मोगर छत्तो, मित्तो मनुन्नो य कंपोयं॥ ६७॥
लंपक पवास मरणं, वाही सिद्धि अमिय सूल मुसलं।
गजो मातंगो खय खिप्पं, थिरो य वद्धमाण परियाणं॥ ६८॥

भावार्थ—आणंद, कालदंड, प्रजापत्य, शुभ, सौम्य, ध्वांक्ष, ध्वज, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मनोज्ञ, कंप, लुंपक, प्रवास, मरण, व्याधि, सिद्धि, अमृत, शूल, मूसल, गज, मातंग, क्षय, क्षिप्र, स्थिर और वर्द्धमान ये २८ उपयोग हैं॥ ६७। ६८॥

२८ उपयोगके फल--

आनन्दो धनलाभाय, कालदण्डो महद्भयम्।
प्रजापतिः सपुत्राय, शुभः सर्वशुभं दिशेत् ॥ ६९॥

सौम्ये सर्वक्रियासिद्धि-र्ध्वांक्षे क्षुद्राय मानसः।
ध्वजेन कोटिरथः स्यात्, श्रीवत्सो रत्नसञ्चयः ॥ ७० ॥
वज्रं वज्रभयं दद्याद्, मुद्गरे मरणं ध्रुवं।
छत्रो नृपसुखं दद्याद्, मित्रे मित्रसमागमः ॥ ७१ ॥
मनोऽन्ये मनसा सौख्यं, कम्पोऽयं भयमापदः।
लुम्पको लुण्टतं चोरान्, प्रवासाच्च जनद्युतिः ॥ ७२ ॥
मरणे मृत्युमाप्नोति, व्याधौ व्याधिमहापदः।
सिद्धौ सर्वक्रियासिद्धिः, शूले शूलसमुद्भवम् ॥ ७३ ॥
अमृतो हरते पापं, मुशले बन्धुनाशनम्।
गजेन धनलाभः स्याद्, मातङ्गो नान्यलाभदः ॥ ७४ ॥
क्षये क्षयो नरेन्द्रस्य, क्षिप्रे क्षिप्रशुभाशुभम्।
स्थिरे च स्थिरकार्याणि, वर्द्धमाने विवर्द्धते ॥ ७५ ॥

भावार्थ—आणंद-धनलाभकारक, कालदंड-भयदायक, प्रजापति-पुत्र दायक, शुभ-सर्व शुभ कारक, सौम्य-सर्व कार्यसिद्धि कारक, ध्वांक्ष-दुष्ट मनःकारक, ध्वज-रथके लाभ कारक, श्रीवत्स-रत्न संचय कारक, वज्र-वज्रभय दायक, मुद्गर-मृत्युदायक, छत्र-नृपसुखदायक, मित्र-मित्र समागम कारक, मनोज्ञ-मनको सुख कारक, कंप-भय और दुःखदायक, लुंपक-चोर भयकारक, प्रवास-जन कांति कारक, मरण मृत्युदायक, व्याधि-रोग कारक, सिद्धि-सर्वकार्य सिद्धिकारक, शूल-शूलरोगोत्पत्ति कारक, अमृत-दुःख नाश कारक, मूसल-बंधुनाशकारक, गज-धनलाभकारक, मातंग-नुकसान कारक, क्षय-नाश कारक, क्षिप्र-शुभाशुभ कारक, स्थिर-

स्थिर कार्य कारक और वर्द्धमान-धनवृद्धि कारक है ॥६४ से ७५॥

पुरुषनववाहनफल—

रवि रिक्खं सिरि धरियं, नामं रिक्खाइ जोइ नवभागं ।
ठवियाय नव वाहण, लहिय फलं कहियं सव्वायं ॥ ७६ ॥
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
खर हय गय मेसाय, जम्बू सिंहोइ काग मोरायं ।
९
हंसोयं नरवाहण, नारद पुच्छेइ हरि कहियं ॥ ७७ ॥
लच्छी हीणि रासभ, धनलाहो हयगये हिं सुह बहुयं ।
मेसे मरण कीरइ, जंबू सुह हरइ सव्वायं ॥ ७८ ॥
सिंहोइ पिसुण मरणं, कागो दुहदाह कीरइ विसेसं ।
मोरोइ अत्थलाभं, हंसो सुह सयल वट्टेयं ॥ ७९ ॥

भावार्थ—रविनक्षत्र और पुरुष नाम नक्षत्र ये दोनों मिलाकर नव का भाग देना, जो शेष बचे वह अनुक्रमसे ९ वाहन जानना; उनके नाम-खर १, हय २, गज ३, मेष ४, जंबूक ५, सिंह ६, कौवा ७, मयूर ८ और हंस ९ । इसका फल--खर वाहन हो तो लक्ष्मीका नाश, हय वाहन हो तो धनका लाभ, गज वाहन हो तो बहुत सुख, मेष वाहन हो तो मरण करे, जंबूक वाहन होतो सुख हरे, सिंह वाहन हो तो दुष्ट मरण करे, काग वाहन हो तो विशेष दुःख दाह करे, मयूर वाहन हो तो धनलाभ करे, हंस वाहन हो तो संपूर्ण सुख रहे । ये वाहन संग्राम और कलह आदि में विशेष तया देखे जाते हैं ॥ ७६ से ७९ ॥

प्रकारान्तरे पुरुषके बारह वाहन--

गय वसह महिस हंसो, साणो वाइस्स हंस छग खरयं ।
जंबुग णाई गरुडं, वाहण ससि रिक्ख नररिक्खा ॥ ८० ॥
"चन्द्र नक्षत्र हुंती नरने नक्षत्र गिणता आवीइ नाम सरिखुं फल विचारीइ" ॥

भावार्थ—चन्द्रनक्षत्रसे पुरुष नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या होवे उसको बारह से भाग देना, जो शेष बचे वे वाहन जानना, उन के नाम-गज, वृषभ, महिष, हंस श्वान, वायस (काग), हंस, छाग (मेष), खर, जंबूक, नाग और गरुड । उसका फल नाम सदृश जानना ॥

किंचित् स्वर ज्ञान

चंद्रनाडीफल-

गमणेइ गिहपवेसे, वत्थुसंगहणे सामि दंसणे य ।
सुहकम्मि धम्मकारणं, वामा ससिनाडी सुह भणिया ॥८१॥

भावार्थ—गमन (देशाटन) में, गृह प्रवेशादिमें, वस्तु संग्रहमें, स्वामी दर्शनमें, शुभ कार्यमें और धर्म कार्यमें चन्द्रनाडी शुभ जानना ॥ ८१ ॥

सूर्यनाडीफल-

संगाम खुद्दकामे, विज्जारंभो विवाय विवहारं ।
भोयण सुरयप्पसंगे, दाहिण रविनाडि सुह भणिया ॥८२॥

भावार्थ—संग्राम क्षुद्रकार्य विद्यारंभ विवाद व्यवहार भोजन

और स्त्रीसेवन इत्यादिकमें दक्षिण सूर्यनाडी शुभ जानना ॥८२॥

स्वर दिशा शूल-

ससिनाडि पुव्व उत्तर-दिसि सूलं हवइ गमण वज्जेयं ।
रविनाडि दिसासूलं, पच्छिम दक्खणयं तिजि गमणं ॥८३॥

भावार्थ—जब चन्द्रनाडी चलती हो तब पूर्व और उत्तर दिशामें शूल है और जब सूर्य नाडी चलती हो तब पश्चिम और दक्षिण दिशामें शूल है तो उस समय उन दिशाओंमें गमन (देशाटन) नहीं करना ॥ ८३ ॥

स्वर द्वारा गर्भज्ञान-

ससि वाम सूर दाहिण, नाडि वहमाण ससि हवइ पुत्ती ।
रविनाडि पुत्त उभयं, गब्भविणासं गुरु भणियं ॥ ८४ ॥

भावार्थ—वाम नासिका चले उसको चन्द्रनाडी और दक्षिण नासिका चले उसको सूर्य नाडी कहते है । जब कोई प्रश्न करे उस वक्त चन्द्रनाडी चलती हो तो पुत्री कहना, सूर्य नाडी चलती हो तो पुत्र कहना और दोनों नाडी एक साथ चलती हो तो गर्भनाश कहना ॥ ८४ ॥

स्वर ऋतु दान-

रतिदान इत्थिएहिं, नाडि ससि हवइ सुया उप्पत्ती ।
सूरो नाडी पुत्तं, गब्भं न धरेइ उभएहिं ॥ ८५ ॥

भावार्थ—स्त्री के ऋतुदान समय चन्द्रनाडी चलती हो तो गर्भमें पुत्री उत्पन्न होवे, सूर्य नाडी चलती हो तो गर्भमें पुत्र उत्पन्न

होवे और दोनो नाडी एक साथ चलती हो तो गर्भ धारन करे नहीं ॥ ८५ ॥

स्वर फल—

रविबल ससिबल तमबल, ताराबल पमुह वसइ अवगणियं।
ससि सूर गहिय सरयं, ठवियं सोपाय अग्गे हिं ॥ ८६ ॥
गुरु सुक्क बुद्ध ससि दिण, वामा सुह किण्ह पक्ख सुविसेसं।
रवि भूम मंद वासर, दाहिण सुह पक्ख धवले हिं ॥ ८७ ॥
निसि ससि वासर सूरं, गमणं वज्जए तूरं।
जे जे वहेइ पुरं, ते ते पय ठविय रिउ दूरं ॥ ८८ ॥

भावार्थ—शुभकार्य करने जाते समय सूर्य बल चन्द्रबल राहुबल और ताराबल आदिका विचार नहीं करना जो स्वर चलता हो उस तरफका पाँव प्रथम धरकर चले तो कार्य सिद्ध होता है। गुरुवार शुक्रवार बुधवार सोमवार और कृष्णपक्ष इनमें चन्द्रस्वर शुभ है; रविवार मङ्गलवार शनिवार और शुक्ल-पक्ष इनमें सूर्य स्वर शुभ है। रात्रीमें चन्द्रस्वर और दिनमें सूर्य स्वर चले तब शीघ्रही गमन करना अच्छा है, जो जो स्वर चले उस तरफ के पाँव प्रथम उठाकर चले तो विजय प्राप्त करता है। दिन-शुद्धि ग्रन्थ में भी कहा है कि—

"पुन्ननाडि दिशापायं, अग्गे किच्चा सया वि ऊ।
पवेसं गमणं कुज्जा, कुणंतो साससंगहं ॥ १ ॥"

जिस तरफ की नाडी पूर्ण चलती हो उस तरफ का पाँव

सर्वदा आगे कर श्वास संग्रह करता हुआ प्रवेश और गमन करे ॥ ८६ से ८८ ॥

वत्स चक्र-

वच्छो तिय संकंतं, कन्ना तुल विच्छि उग्गए पुव्वं ।
धन मकर कुंभ दक्खणि, पच्छिम मीने हि छग वसहं ॥८६॥
मिथुनेइ कर सिंहे, उत्तर मुह वच्छ वसइ नहु गमणं ।
नहु चेई घर बारं, बिंबं निय घरे न पवेसं ॥ ६० ॥
आऊय हरइ संमुह, वच्छो पुट्ठे करेइ धनहाणि ।
पासेइ वाम दाहिण, कज्जं सव्वे हिं सारे यं ॥ ६१ ॥

भावार्थ—कन्या तुला और वृश्चिक ये तीन संक्रांति को पूर्व दिशामें वत्स उगता है, धन मकर और कुंभ संक्रांति को दक्षिण दिशामें, मीन मेष और वृष संक्रान्ति को पश्चिम दिशामें, मिथुन कर्क और सिंह संक्रांति को उत्तर दिशामें वत्स रहता है। सम्मुख वत्स में वास करना या देशाटन करना नहीं, नवीन मंदिर बनाना नहीं, गृहवास्तु नहीं करना और जिनबिंब प्रवेश अपने घरमें नहीं करना। सम्मुख वत्स हो तो आयुष्य का नाश करता है, पूंठे वत्स हो तो धन का नाश करता है, बाँय और दक्षिण दोनों तरफ हो तो सब कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ८६ से ६१ ॥

शिव चक्र—

पुव्वाइ पोसमासे, वसए सिव माह फग्गुणि ईसाणे ।
चित्तेइ वसइ उत्तरि, वाए वइसाह जिट्ठे हिं ॥ ६२ ॥

आसाढे पच्छिमयं, सावण भद्दव नेरई कूणे।
दक्खण दिसे हि अस्सणि, कत्तिग मिगसिर हि अग्गी हिं॥ ६३॥
दिसि मज्झि घडी अढीयं, विदिसे पंचेव घडिय वसिएहिं।
मासो फिरइ सिहारं, सिट्ठोपरि भमइ घडियाइं॥ ६४॥
गमणे य जुद्ध जूए, पुरीपवेसे वणिज्ज आरंभे।
सिवचक्क पुट्ठि मुट्ठे, धरि भंजेइ पंचसयं (!)॥ ६५॥

भावार्थ—पौष मासको पूर्व दिशामें शिवका वास है, माघ फाल्गुन मासको ईसान कोणमें, चैत्र मासको उत्तर दिशामें, वैशाख जेष्ठ मासको वायव्य कोणमें, आषाढ मासको पश्चिम दिशामें, श्रावण भाद्रपद मासको नैऋत कोणमें, आश्विन मासको दक्षिण दिशामें और कार्तिक मार्गशीर्ष मासको अग्नि कोणमें शिवका वास रहता है; दिशामें अढाई घडी और विदिशा (कोण) में पांच घडी तक प्रत्येक दिन शिवका वास होता है। यह देशाटन करना, युद्ध करना, जूगार (द्यूत) खेलना, नगर प्रवेश करना और व्यापार का आरंभ करना इत्यादिक में शिव वास पूंठे या दक्षिण तरफ हो तो लाभ दायक है। अन्य ग्रन्थों में भी कहा है कि-यह शिव शुभ होनेसे स्वर शकुन भद्रा ग्रहबल दिग्दोष और योगिनी आदि सब शुभ होते है॥ ६२ से ६५॥

तत्काल जोगिनी स्थापना—

दिण दिसि धुरि चउ घडिया, पुरओ पुव्वुत्त दिसि हि अणुक्कमसो।
तक्काल जोगिनी सा, वज्जेयव्वा पयत्तेणं॥ ६६॥
चउरो य दिसा विदिसं, जोगिणी वसिएहिं सोडसा तिहियं।

पुव्विं पडिवइ नवमि य, अग्गी तीया इगारसिीए ॥ ९७ ॥
दाहिणि पंचमि तेरसि, नेरय कुणे हि चउत्थि बारसिया।
पच्छिम छट्ठि चउद्दिसि, वाइव पडिपुन्न सत्तमि या ॥ ९८ ॥
उत्तरी बीया दसमी, ईसाणे मावसी य अट्ठमिया।
भणियं योगिणि सिट्ठं, गमणं वामो इजू पुट्ठं ॥ ९९ ॥

भावार्थ— जिस जिस दिनको जिस जिस दिशामें पूर्वोत्तर दिशाके अनुक्रमसे योगिनी का वास कहा है उस दिशामें प्रभात को चार घडी योगिनी रहती है, उसको तत्काल योगिनी कहते है; वह यात्रादि में प्रयत्नसे छोडना चाहिये। उसकी थापना यथा-चार दिशा और चार विदिशा में योगिनी अनुक्रमसे सोलह तिथि रहती है जैसे-प्रतिपदा और नवमी को पूर्व दिशामें, तृतीया और एकादशी को अग्निकोणमें, पंचमी और त्रयोदशी को दक्षिण दिशामें, चतुर्थी और द्वादशी को नैर्ऋत कोणमें, षष्ठी और चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी और पूर्णिमा को वायव्य कोणमें, दशमी और द्वितीयाको उत्तर दिशामें, अष्टमी और अमावास्या को ईसान कोणमें योगिनी रहती है। वह पूंठे हो या बांये तर्फ हो तो गमन करना श्रेष्ठ है ९६ से ९९ ॥

मास राहु फल—

पुव्वे विच्छीय तियं, दक्खणि कुंभाई तीयाई।
वसहाइ तीय पच्छिम, उत्तरि सिंहाइ तिय राहो ॥ १०० ॥
संमुह राहो गमणं, न कीरए विग्गह होइ पिसुणायं।

गिहबार पमुहायं, जे कीरइ तहा असुहायं ॥ १०१ ॥

भावार्थ—वृश्चिक धन और मकर राशिको पूर्व दिशामें, कुम्भ मीन और मेष राशि को दक्षिण दिशामें, वृष मिथुन और कर्क राशि को पश्चिम दिशामें, सिंह कन्या और तुला राशिको उत्तर दिशामें राहु रहता है। संमुख राहु हो तो देशाटन नहीं करना विग्रह और मत्युका भय रहता है और गृहद्वार आदि कराने से अशुभ फलदायक होता है ॥ १०० । १०१ ॥

अथ वार राहु फल—

अह वारे हिं राहो, नेरय आइच्च सोम उत्तरयं ।
अगनेय कूण मंगल, पच्छिम दिसिएहिं बुद्धेहिं ॥ १०२ ॥
वाइव ईसाणं गुरु, दक्खणि सुक्केइ पुव्वदिसि मंदो ।
ठवियं दाहिणि पुट्ठे, कीरइ गमणं च फलदाई ॥ १०३ ॥

भावार्थ—रविवार को नैर्ऋत कोणमें, सोमवार को उत्तर दिशामें, मंगलवार को आग्नेय कोणमें, बुधवार को पश्चिम दिशा में, गुरुवार को ईसान कोणमें, शुक्रवार को दक्षिण दिशामें और शनिवार को पुर्व दिशामें राहु रहता है। उसको पूंठे और दक्षिण तरफ रखकर गमन करना शुभ फल दायक है ॥ १०२ । १०३ ॥

अर्द्ध प्रहरी राहु फल—

पुव्वे वाइव दक्खणि, ईसाणे पच्छिमे य अग्गी हिं ।
उत्तर नेरय राहू, वसए अधपुहर पणविहं ॥ १०४ ॥

भावार्थ—पूर्व वायव्य दक्षिण ईशान पश्चिम अग्नि उत्तर और नैर्ऋत इस अनुक्रमसे आठों ही दिशा में अहोरात्र में दो बार

मध्ये प्रहर (चार चार घडो) राहु रहता है ॥ १०४ ॥

अथ शुक्र फल—

भिगु पुव्व हि उग्गइ, दीहा बावन्न बि सयहि व अत्थं।
पण पक्ख ति दिहि ऊणा, पुव्वे दिण तिन्न बालायं ॥ १०५ ॥
सोलस दिण अमासा, पच्छिम दीसेइ तेर दिण अत्थं।
बुड्डोइ पनर दिवसं, पुट्ठिं वामोइ भिगु सुक्खं ॥ १०६ ॥
संमुह भिगु नहु गमणं, गुव्विण नारि य बालसहिया यं।
नव परिणिय नरवरे यं, सुक्खं हारेइ हेलाइं ॥ १०७ ॥
गुव्विणी गब्भ सवई, बालय सहियाइ बाल मरिजाई।
नव परणीय वंझा, नरवर हेलाइं दुक्खाई ॥ १०८ ॥
सड बोले हिं न दोसं, गामं इग पुरइ गेहि वास वसे।
वीवाहे कंतारे, विदुर निवदेव जाई हिं ॥ १०९ ॥
सवि सुक्ख चित्तमासे, जिट्ठे आणंद जलहि आसाढे।
बहु सोय पोह माहे, भद्दव वइसाह पसुपीडं ॥ ११० ॥
विग्गह कत्ती फग्गुणी, मिगसिरनि भंग पररज्जदुह आसो।
अन्न समग्घं सावण अत्थं भिगुए रिसं अड्डं ॥ १११ ॥
भिगु चक्खु वाम कांणय, दाहिण चक्खुइ रेवया तिन्नं।
किसिगरिक्खं इग पय, अंधो भिगु किरइ नहु दोसं ॥११२॥

भावार्थ—पूर्वदिशामें शुक्र २५२ दिन उदय रहता है, ७२ दिन अस्त रहता है और उदयसे तीन दिन बाल्य रहता है। पश्चिम दिशामें २५६ दिन उदय रहता है और १३ दिन अस्त रहता है;

पूर्वास्त में १५ दिन वृद्ध रहता है। संमुख शुक्र हो तो गमन नहीं करना, गर्भिणी या बालकवाली स्त्री, नव परणीत स्त्री और राजा आदि गमन करे वो इन्होंका सुख शीघ्र ही नाश हो जाता है—गर्भिणी का गर्भस्राव, बालकवालीका बालकके साथ मृत्यु, नवोढा स्त्री वंध्या हो जाय और राजा शीघ्र ही दुःख पावे। एक ही गाम नगरमें या अपना (पुराना) मकानमें, विवाहमें दुर्भिक्षमें, राज्यविप्लवमें, राजा की मुलाकातमें और तीर्थयात्रा करनेमें, इन छ कारणोंमें शुक्र का विचार नहीं किया जाता है।

अथ शुक्रास्त फल—चैत्रमासमें शुक्र अस्त हो तो सर्व सुखकारक, ज्येष्ठ में आणंदकारी, आषाढमें अच्छी वर्षा, पौष और माघ मासमें बहुत शीत, भाद्रपद और वैशाखमें पशुको पीडा, कार्त्तिक और फाल्गुनमासमें विग्रह, मार्गशीर्ष में देशभंग, आश्विनमें परराज्य से दुःख और श्रावणमें अनाज सस्ता हो।

रेवती आदि तीन नक्षत्रमें चन्द्रमा हो तब शुक्र बांयी या दक्षिण आंखसे कांना जानना और कृत्तिका का प्रथम पादमें चन्द्रमा हो तब शुक्र अंधा जानना, यह दोष नहीं करता है, आरम्भ सिद्धि में कहा है कि—"अश्विन्या वह्नि पादान्तं, यावच्चरति चन्द्रमाः। तदा शुक्रो भवेदन्धः, संमुखं गमनं शुभम्॥" इत्यादि॥

सिवचक्कं राहुचक्कं, पुट्ठी दाहिणो य सिद्धि कारियं।
सुक्कोइ जोगिणी यं, पुट्ठि वामोइ फलदाई॥ ११२॥

भावार्थ—शिवचक्र और राहुचक्र पृष्ठ या दक्षिण तरफ हो वो सिद्धि कारक है, शुक्र और योगिनी पृष्ठ या बांये तरफ हो

ती शुभ फल दायक है ॥११३॥

कीलक फल-

कीलय उत्तरि उफा, जिट्ठा पुव्वे हिं पूभ दक्खण यं।
अत्थमिणे रोहणि यं, गमणं वज्जे हिं सव्वे हिं ॥ ११४ ॥

भावार्थ—उत्तर दिशामें उत्तराफाल्गुनी को, पूर्वमें ज्येष्ठा को, दक्षिणमें पूर्वा भाद्रपद को और पश्चिम में रोहणी को कीलक है, संमुख कीलक में गमन नहीं करना ॥ ११४॥

परिघदंड—

वाएहिं अगनि रेहा, क्रित्ति सग पुव्वि सग मघा दहिणे।
सग अणुराहा पच्छिम, उत्तरि सग धणिट्ठ रिक्खाणं ॥११५॥
जे जे पुव्वा उत्तरि, जे जे दहिणे हि पच्छिमे रिक्खा।
विवरीया नहु गमणं, परिघं पंसि सिय परिमाणं ॥ ११६ ॥

भावार्थ—चतुष्कोण चक्रमें वायव्य और अग्नि कोण गत एक रेखा देनी, उसमें कृत्तिकादि ७ नक्षत्र पूर्वमें, मघादि ७ नक्षत्र दक्षिणमें, अनुराधादि ७ नक्षत्र पश्चिम में और धनिष्ठादि ७ नक्षत्र उत्तर में रखना यह परिघ दण्ड है, उस को उल्लंघन नहीं करना, जो जो पूर्वोत्तर नक्षत्र हैं और जो जो दक्षिण पश्चिम नक्षत्र हैं उसमें विपरीत गमन नहीं करना ; अर्थात् पूर्वोत्तर नक्षत्रोंमें दक्षिण पश्चिम की यात्रा और दक्षिण पश्चिम के नक्षत्रों में पूर्वोत्तर की यात्रा नहीं करना ॥ ११५, ११६ ॥

परिघ माहात्म्य—

अग्नेयं च वायव्यां, परिघस्तिष्ठति महीम् ।
देवा अपि न लङ्घन्ति, दानवा अपि मानवाः ॥ ११७ ॥

भावार्थ—पृथ्वी पर आग्नेय कोण और वायव्य कोणमें परिघ दण्ड रहा है उसको देव दानव और मनुष्य भी उल्लंघन नहीं करते हैं ॥ ११७ ॥

पंचक फल—

धणिट्ठाइ वज्जि पंचग, संगह तिण कट्ठ गेह आरम्भं ।
मियकम्मं सिज्जायं, दक्खिण दिग जाइ पमुहा यं ॥११८॥
धणनास धणिट्ठाए, पाणघाव हि सितभिसं रिक्खं ।
पुव्वभद्दं निवदण्डय, उत्तरभद्द कलह कारीयं ॥ ११९ ॥
अग्गी दाहो रेवय, पञ्चग पंचेइ लक्खणं एयं ।
जाणेय वज्जियव्वो, हीरं जोइसिय कहियायं ॥ १२० ॥

भावार्थ—धनिष्ठादि पांच नक्षत्रोंको पञ्चक कहते है, इसमें तृण काष्ठ का संग्रह नहीं करना, मकान सम्बन्धी कोई कार्य नहीं करना, मृतकर्म नहीं करना, शय्या मांचा आदि बनाना नहीं और दक्षिणदिशामें गमन नहीं करना । धनिष्ठा धनका नाशकारक, शतभिषक् प्राणघातक, पूर्वाभाद्रपदा नृपदण्डकारक, उत्तरा भाद्रपदा कलहकारक और रेवती अग्निदाहकारक है; ये पञ्चक के पांच लक्षण जानकर उसको त्याग करना चाहिये ऐसे 'हीर' ज्योतिषी कहते है ॥ ११८ से १२० ॥

पुनःकहते है—

पञ्चके पञ्च गुणितं, त्रिगुणं त्रिपुष्करे।
यमले द्विगुणं सर्वं, हानिवृद्ध्यादिकं मतम् ॥ १२१ ॥

भावार्थ—सर्व कार्य पञ्चकमें पांचगुना, त्रिपुष्कर में त्रिगुना और यमल में द्विगुना फलकी हानि वृद्धि होती है ॥ १२१ ॥

त्रिविध दिशा शुल—

पडिवा नवमी तिही, रिक्खं रोहिणी पुव्वसाढाय ।
वाराइ मन्द सोमं, पुव्वं वज्जेइ दिसिसूलं ॥ १२२॥
तिहिया पञ्चमि तेरसि, अस्सणि चित्ता य सवणरिक्खाय ।
वारो हि गुरु कहियं, दक्खणि वज्जे य दिसि सूलं ॥ १२३॥
छट्टि चउद्दसि तिहियं, सवणं मूलो य पुक्ख दिसियायं ।
वारं भिगु सूरोथं, पच्छिम वज्जेइ दिसिसूलं ॥१२४ ॥
बीया दसमी तिहिया, रिसियं हत्था य उत्तराफग्गुणी ।
बुध भोमो वाराय, उत्तरि वज्जेइ दिसिसूलं॥१२५ ॥

भावार्थ—प्रतिपदा और नवमी तिथि को, रोहिणी और पूर्वाषाढा नक्षत्रको, शनि और सोमवार को पूर्व दिशामें शूल है उसको गमनादि कार्यमें त्याग करना। पञ्चमी और त्रयोदशी तिथिको, अश्विनी चित्रा और श्रवण नक्षत्रको और गुरुवार को दक्षिण दिशामें शूल है। षष्ठी और चतुर्दशी तिथिको, श्रवण मूल और पुष्य नक्षत्रको, शुक्र और रविवार को पश्चिम दिशामें शूल है। द्वितीया और दशमी तिथिको, हस्त और उत्तराफाल्गुनी

नक्षत्र को, बुध और मङ्गलवार को उत्तर दिशामें शूल है इसको गमनमें त्याग करना ॥ १२२ से १२५ ॥

नक्षत्र दिशा शूल—

पुव्वे असलेस मघा, पुव्वाषाढम्मि रोहिणी सूलं।
दक्खिण चित्त विसाहा, अस्सणि भरणी य दिसि चउरो ॥१२६॥
पच्छिम रोहिणी सवणं, मूलो पुक्खाइ रिक्ख चउ सूलं।
उफाइ हत्थ रेवइ, उत्तर दिसि वज्जए गमणं ॥ १२७ ॥

भावार्थ—पूर्वदिशामें आश्लेषा मघा पूर्वाषाढा और रोहिणी को शूल है, दक्षिण दिशामें चित्रा विशाखा अश्विनी और भरणी को शूल है, पश्चिम दिशामें रोहिणी श्रवण मूल और पुष्य ए चार नक्षत्र को शूल है और उत्तर दिशामें उत्तराफाल्गुनी हस्त और रेवती नक्षत्र को शूल है, ये गमन में त्याग करना ॥१२६॥ १२७ ॥

वार दिशा शूल--

वारेहिं गुरु दक्खणि, उत्तरि बुध भोम पुव्वि सनि सोमं।
सुक्क रवे पच्छिमयं, सूलं दिसिए य वज्जाइ ॥ १२८ ॥

भावार्थ—गुरुवारको दक्षिण दिशामें, बुधवार और मङ्गलवारको उत्तर दिशामें, शनिवार और सोमवार को पूर्व दिशामें शुक्रवार और रविवारको पश्चिम दिशामें शूल है ये गमनमें त्याग करना ॥ १२८ ॥

विदिशा शूल--

अग्नेय सोम सुरगुरु, नेरय भिगु सूर वाई भूमेहिं।

ईसाणे बुध मन्दो, वारं विदिसं य सूले हिं ॥ १२६ ॥

भावार्थ—सोमवार और गुरुवार को आग्नेय कोणमें, शुक्रवार और रविवारको नैऋत कोणमें, मङ्गलवार को वायव्य कोणमें, बुधवार और शनिवार को ईशान कोणमें शूल है॥ १२६ ॥

दिशाशूल परिहार-

रवि चंदण ससि दहियं, माटो य भोमे हि बुध नवणीयं।
गुरु लोट भिगु तिल्ल, सनि खल चलएहिं कल्लाणं ॥१३०॥

भावार्थ— रविवार को चंदन, सोमवार को दहिं, मंगलवार को मट्टी, बुधवार को घी, गुरुवार को आटा, शुक्रवार को तेल और शनिवार को खल, इनका तिलक कर गमन करे तो सर्वत्र मंगलिक होता है॥ १३० ॥

प्रकारान्तरे भाषामें—

रवि तंबोल मयंकह दप्पण, धाणा चावउ पुहवी नंदण।
बुध गुल खाउं सुरगुरु राई, सुक्र करंबउ जिमरे भाई॥
जउ सनिवार विडंगह चावई, पर दल जीपीनइ घर आवइ॥१३१॥

भावार्थ— रविवार को तंबोल चावकर, सोमवार को दर्पण देखकर, मंगलवार को धनिया चावकर, बुधवार को गुल (गुड) खाकर, गुरुवार को राई चावकर, शुक्रवार को करंब (धान्य विशेष) खाकर और शनिवार को भावडिंग चावकर गमन करे तो शत्रु को जीत कर सुखसे घरपर आवे॥ १३१ ॥

रवि वासा—

मीनाइ तीय पुव्वे, मिहुणो तीयाइ दक्खिण वासो।

कन्नाइ तीय पच्छिम, धण तीयाइ उत्तरे सूरो ॥ १३२

भावार्थ— मीनादि तीन राशि को पूर्वदिशामें, मिथुनादि तीन राशि को दक्षिणदिशामें, कन्यादि तीन राशि को पश्चिम दिशामें ओर धनादि तीन राशि को उत्तर दिशामें सूर्य का वास है ॥ १३२ ॥

दिशा विदिशा में रवि प्रहर प्रमाण—

अग्गी दक्खणि नेरय, पच्छिम वाइव्व उत्तर ईसाणे ।

पूव्वे हिं अड दिसयं, वसए रवि पुहर अणुक्कमसो ॥१३३ ॥

भावार्थ— अग्नि दक्षिण नैर्ऋत पश्चिम वायव्य उत्तर ईशान और पूर्व ये आठों ही दिशामें अनुक्रमसे एक एक प्रहर रवि रहता है ॥ १३३ ॥

रवि फल-

गमणेहिं सूर दाहिण, पुरी पवेसेइ वामउ सुक्खं ।

लाहोइ सूर संमुह, पुट्ठो भाणोइ दुह कीरइ ॥ १३४ ॥

न तित्थं न रिक्खं, न सिसं भद्दा वाराइ न वितीपातं ।

सव्वे कज्ज समारइ, सुपसन्नो हवइ सूरो ॥ १३५ ॥

भावार्थ— दक्षिण सूर्य हो तो गमन करना, बांये तरफ हो तो नगर प्रवेश करना सुखकर है। सन्मुख सूर्य हो तो लाभ दायक होता हैं और पूंठे रवि हो तो दुःख कारक है। तिथि नक्षत्र चंद्रबल भद्रा वार और व्यतिपात इत्यादिक का दोष नहीं देखना, क्योंकि एक ही सूर्य शुभ हो तो सर्व कार्य प्रारंभ करने स सिद्ध होते हैं ॥ १३४ ॥ १३५

वत्स रवि राहु फल—

मीनाइ तियं भाणो, वच्छो कन्नाइ रासियं तियं ।
विच्छीइ तियं राहो, वज्जे गिह कम्म तीयायं ॥ १३६ ॥
भाणो वच्छो राहो, संमुह दिट्ठी वि आऊयं हरई ।
पुट्ठेइ धणं खीया, कहियं जोएससत्थम्मि ॥ १३७ ॥

भावार्थ— मीनादिसे सूर्य, कन्यादि से वत्स और वृश्चिकादिसे राहु ये तीनों गृहकार्य में छोड़ना चाहिये । सूर्य वत्स और राहु ये संमुख हो तो आयुष्य का नाश करता है और पूंठे हो तो धनका नाश करता है ऐसा ज्योतिश्शास्त्रोंमें कहा है ॥१३६-१३७ ॥

स्थिर योग—

तिहि अड तेरसि रित्ता, रेवय जिट्ठा य अद्द असलेसा ।
उफ उसा कित सितभिस, साई गुरुसनि थिवर जोगोयं ॥१३८॥

भावार्थ—अष्टमी त्रयोदशी और रिक्ता (४ -९-१४) ये तिथि, रेवती ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, कृत्तिका, शतभिषा और स्वाति ये नक्षत्र, गुरु और शनिवार इनका संजोग से थिर योग होता है ॥ १३८ ॥

इसमें अनशन करना, क्षेत्रखेडना व्याधि ऋण और शत्रु का नास करना, युद्ध समाप्ति करना (संधि करना) जलाशय बंधाना इत्यादि में थिर योग अच्छा है ऐसा पाकश्री ग्रन्थमें कहा है—

"अणसण खिल वाहि, रिणं रिउ रण दिव्वं जलासए बंधो ।
कायव्वो थिरजोगो जेस्स य करणं पुणो नत्थि ॥ १ ॥"

सर्वांक योग—

तिथि वार रिक्ख इक्कं, मिलि अंकाइ कहिय सव्वंकं ।
पण इग्गारस तेरस, सतर ओगणीस तेवीसं ॥ १३६ ॥
पणवीसा गुणतीसा, इगतीस सइतीस पगयालीसा ।
तेयालीस इताला, पमुहा सव्वेहिं मंगलं ॥ १४० ॥

भावार्थ— तिथि वार और नक्षत्र ये तीनों के अंको का मिलाना, उसको सर्वांक योग कहते है; इन अंको का जोड़—

५ । ११ । १३ । १७ । १६ । २३ । २५ ।२६। ३१ । ३७ ।४१ । ४३ । ४७ । ये हो तो शुभ है ॥ १३६ ॥ १४० ॥

प्रकारान्तरे सर्वांक योग–

वार तिथि रिसि धरिये एकट्ठ, बिमणा त्रिवणा चउगुणा करिय भाग सवि देइ पिहु पिहु, छप सत्त अट्ठे वलगि वधत अंक चिहु ठामि ग्गहु ।

आदि सून्य दुहदाईयउ, मज्झे लच्छि वियोग ।
अंति सून्य हुइ हाणिकर, सव्वंके सुभ योग ॥ १४१ ॥

भावार्थ —वार तिथि और नक्षत्र ये तीनों के अंको को इकट्ठा कर तीन जगह रखना, उनकी द्विगुना त्रिगुना और चौगुना करना उसको अनुक्रमसे छ सात और आठ से भाग देना, आद्यके शेषमें शून्य आवे तो दुःखदायक, मध्य शून्य आवे तो लक्ष्मी नाश कारक और अन्त्य शून्य आवे तो मृत्यु कारक है। सभी शेष में अंक बचे तो शुभ योग जानना ॥ १४१ ॥

रवि योग—

रवि रिक्ख लेइ दिण रिक्ख, गिणहु चउ छट्ठ नव दस तेरे।
वीसम ए रवियोगा, सिद्धईय सव्व जोगाई ॥ १४२ ॥
इक्कं सिंह किसोयर, गय घड भज्ज ति तस्स कोडीओ।
रविजोग सय पलाणा, गयणम्मि गया न दीसन्ति ॥ १४३ ॥

भावार्थ— सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त गिनना जो-४। ६। ९। १०। १३। २० इन्हीं में से कोई संख्या हो तो रवि योग होता है। यह सभी योगों में श्रेष्ठ माना गया है जैसे-सिंह का बच्चा मदोन्मत हाथी का कुंभस्थल को तोड़ देता है ऐसे एकही रवियोगके उदयसे सैंकड़ों कुयोग अस्त हो जाते है सो दिखते भी नहीं। इन रवियोग का फल आरम्भ सिद्धिकी टीका में कहा है कि "एआण फलं कमसो, विउलं सुक्खं ४ जयं च सत्तूणं ६। लाभं ९ च कज्ज सिद्धि १०, पुत्तुप्पत्ती अ १३ रज्जं च २०॥ १॥" इन रवियोग का फल अनुक्रम से जान लेना; जैसे-४ संख्या हो तो सुख, ६ हो तो शत्रुका नाश, ९ हो तो लाभ, १० हो तो कार्य सिद्धि, १३ हो तो पुत्रोत्पत्ति का लाभ और २० हो तो राज्य सुख मिले इत्यादि ॥ १४२ ॥ १४३ ॥

राज योग—

तिया पुन्निम भद्दा, भू बुध रवि सुक्क पुक्ख मिग भरणी।
पूफा पूसा ऊभा, चित्ता अणु धणिट्ठ निवजोगा। १४४ ॥
गृहप्रवेशो मैत्री च, विद्यारम्भादिसत्क्रिया।
राजपट्टाभिषेकादि, राज योगे ऽभिधीयते ॥ १४५ ॥

भावार्थ— तृतीया पूर्णिमा और भद्रा (२-७-१२) ये तिथि, मंगल बुध रवि और शुक्र ये वार, पुष्य मृगशीर्ष भरणी पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा उत्तराभाद्रपदा चीत्रा अनुराधा और धनिष्ठा ये नक्षत्र इनके संजोग से राजयोग होता है। वह गृह प्रवेश में मैत्री करने में विद्यारंभादि सत्क्रीया में और राज्याभिषेकादि में राजयोग शुभ कहा गया हैं ॥ १४४ ।१४५ ॥

कुमार योग—

नंदा पंचमि दसमी, ससि बुध भिगु मंगल मघ सवणं ।
अस्सणी रोहिणि पुणव्वसु, हत्थ विसाहा कुमार जोगा ॥ १४६ ॥

भावार्थ—नंदा (१-६-११) पंचमी और दशमी ये तिथि, सोम बुध शुक्र और मंगल ये वार, मघा श्रवण अश्विनी रोहिणी पुनर्वसु हस्त और विशाखा ये नक्षत्र, इनके संजोगसे कुमारजोग होता है ए शुभ कार्य में अच्छा है ॥ १४६ ॥

ज्वालामुखी योग—

पडिवइ मूलं रिसी यं, पंचमि भरणीय किचि अट्ठमीयं ।
नवमी दिण रोहिणीयं, दसमी असलेस दुह दियीयं ॥ १४७॥
एए ही जोगजाला, जम्मं जो हवइ सो मरइ बाला ।
उवसइ गेहसाला, परि हरियं वरइ जयमाला ॥ १४८ ॥

भावार्थ—प्रतिपदा और मूलनक्षत्र, पंचमी और भरणी, अष्टमी और कृत्तिका, नवमी और रोहिणी, दशमी और आश्लेषा ये ज्वालामुखी योग है, वह दुःखदाई है। इस योगमें जन्म होनेसे बालक मर जाता है, गृहादिक का आरंभ करे तो गिर जाता है।

इस योगका त्याग करने से विजयमाला होती है ॥

अशुभ योग-

संवत्त सूल सत्तू, भसमो दण्डो य वज्रमुसलायं ।
कालमुही यमघण्टं, यमदाढं काण मिच्चायं ॥ १४६ ॥
ज्वालामुही य खंजो, यमलं उप्पाय कक्कडा जोगं ।
एएहिं जोग सोडस, सव्वे कज्जे हि असुहायं ॥ १५० ॥

भावार्थ—संवर्त्त शूल शत्रु भस्म दण्ड वज्रमुसल कालमुखी यमघण्ट यमदंष्ट्रा काण मृत्यु ज्वालामुखी खञ्ज यमल उत्पात और कर्कट ये सोलह योग सभी शुभ कार्यों में अशुभ माने हैं ॥

शुभयोग-

थिवरो य राजयोगं, कुमारयोगं च अमिय सिद्धि जोगं ।
सव्वंकं रवियोगं, एएहिं हणइ अवजोगं ॥ १५१ ॥

भावार्थ—स्थविर (स्थिर) योग, राजयोग, कुमारयोग, अमृत सिद्धि योग, सर्वांकयोग और रवियोग ये शुभयोगों हैं; ये सभी अशुभयोगों का नाश कर देते हैं ॥ १५१ ॥

त्रिकशुद्धियोग-

हत्थुत्तरा तियं मूलं, पुक्ख धणिट्ठाई अस्सणी रेवइ ।
पडिवा अट्ठमि नवमी, रविसंजोगे सुहा होई ॥ १५२ ॥
बीया नवमी पुक्खं, मिगसिर रोहिणि य सवण अणुराहा ।
चन्दाण य संजोगे, संसय रहियं सुहा होई ॥ १५३ ॥
रेवय मिगसिर अस्सणि, मूलं असलेस उत्तराभद्दं ।

छट्ठि तिथा अड तेरिसि, मङ्गल जोगे सुहा होई ॥ १५४ ॥
सवणं रोहिणि पुक्खो, मिगसिर अणुराह किप्तिगा रिक्खा।
बीया सत्तमि बारसि, जोगे बुधवार सुह होई ॥ १५५ ॥
पुव्वाइ हत्थ पुक्खं, रेवइ अस्सणि विसाह पुणव्वसयं।
पञ्चमि दसमी गारिसि, पुन्निम गुरु जोगे सुह होई ॥ १५६ ॥
उत्तरसाढा अस्सणि, रेवइ अणुराह पुणव्वसं हत्था।
पुव्वाफग्गुणि तेरिसि, नन्दा तिहि सुक्क सुह होई ॥ १५७ ॥
सवणं पुव्वाफग्गुणि, रोहिणि साई मघा य सितभिसयं।
चउत्थि नवमी चउद्दिसि, अट्ठमि सुह जोग सनि होई ॥१५८॥

भावार्थ—रविवारको हस्त तीनों उत्तरा मूल पुष्य धनिष्ठा अश्विनी और रेवती नक्षत्र, प्रतिपदा अष्टमी और नवमी तिथि हो तो शुभ है॥ सोमवारको द्वितीया और नवमी तिथि, पुष्य मृगशीर्ष रोहिणी श्रवण और अनुराधा नक्षत्र हो तो शुभ है॥ मङ्गलवार को रेवती मृगशीर्ष अश्विनी मूल आश्लेषा और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, षष्ठी तृतीया अष्टमी और त्रयोदशी तिथि हो तो शुभ है॥ बुधवारको श्रवण रोहिणी पुष्य मृगशीर्ष अनुराधा और कृत्तिका ये नक्षत्र, द्वितीया सप्तमी और द्वादशी तिथि हो तो शुभ है॥ गुरुवार को तीनों पूर्वा हस्त पुष्य रेवती अश्विनी विशाखा और पुनर्वसु नक्षत्र, पञ्चमी दशमी एकादशी और पूर्णिमा तिथि हो तो शुभ है॥ शुक्रवार को उत्तराषाढा अश्विनी रेवती अनुराधा पुनर्वसु हस्त और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, त्रयोदशी और नन्दा (१-६-११) तिथि हो तो शुभ है॥ शनिवारको श्रवण

पूर्वाफाल्गुनी रोहिणी स्वाति मघा और शतभिषा नक्षत्र, चतुर्थी नवमी चतुर्दशी और अष्टमी तिथि हो तो शुभ होते हैं ॥ १५२ से १५८ ॥

तिथिवार नक्षत्र के शुभयोग यंत्र

रवि...ह० उ० उ० उ० मू० पु० ध० अ० रे० १—८- ६
सोम...पु० मृ० रो० श्र० अनु० २— ६-- ०- ०- ०- ०
मङ्गल...रे० मृ० अ० मू० अश्ले० उभ० ६-- ३---८- १३--०
बुध...श्र० रो० पु० मृ० अनु० कृ० २— ७-- १२- ०--०
गुरु... पू ३- पु० रे० अ० वि० पुन० ह०--५-१०--११--१५-०
शुक्र...उषा० अ०रे० अ० पुन० ह० पूफा० १३---१---६--११--०
शनि...श्र० पूफा० रो० स्वा० म० श० ४-६--१४—८--०—०

अथ तिथि वार नक्षत्र अशुभ योग—

रवि छट्ठी सत्तमि या, बारिसि चउद्दिसी गारिसी जिट्ठा।
अणुराहा य विसाहा, मघ भरणी जोगि असुहाई ॥ १५९ ॥
सोम गारिसि सत्तमी, बारिसि चउद्दिसि य पुव्वसाढा यं।
उतरसाढा चित्ता, विसाखाह जोगे हि असुहाई ॥ १६० ॥
भोमे दसमी पडिवा, एगारिसि अद्द उतरासाढा।
धणिट्ठा सितभीस, पूभद्द जोगे मिलिए हि असुहाई ॥ १६१ ॥
बुध तिया अड तेरिसि, पडिवा नवमो य चवद्दिसी मूलं।
रेवय अस्सणि भरणी, धणिट्ठा अणुराह असुहाई ॥ १६२ ॥

गुरु बीया सग बारसि, चउत्थी छट्ठी य अट्ठमी ऊफा ।
किशिग रोहिणी मिगसिर, अद्दा सितभिसह असुहाई ॥१६३
भिगु चउ नवमी चवदिसि, बीया सत्तमिय तीय रोहिणि या ।
जिट्ठ मघ असलेसा, पुक्खं पमुहाइ असुहाई ॥ १६४ ॥
शनि पण दसमी पुन्निम, छट्ठी सत्तमि य रेवई चित्ता ।
हत्था उत्तरसाढा, उत्तरफग्गुणि य असुहाई ॥ १६५ ॥

भावार्थ—रविवारको षष्ठी सप्तमी द्वादशी चतुर्दशी और एकादशी तिथि, ज्येष्ठा अनुराधा विशाखा मघा और भरणी नक्षत्र हो तो अशुभ है ॥ सोमवार को एकादशी सप्तमी द्वादशी और चतुर्दशी तिथि, पूर्वाषाढा उत्तराषाढ़ा चित्रा और विशाखा नक्षत्र हो तो अशुभ है ॥ मंगलवार को दशमी प्रतिपदा और एकादशी तिथि, आर्द्रा उत्तराषाढा धनिष्ठा शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र हो तो अशुभ है ॥ बुधवार को तृतीया अष्टमी त्रयोदशी प्रतिपदा नवमी और चतुर्दशी तिथि, मूल रेवती अश्विनी भरणी धनिष्ठा और अनुराधा नक्षत्र हो अशुभ है ॥ गुरुवार को द्वितीया सप्तमी द्वादशी चतुर्थी षष्ठी और अष्टमी तिथि, उत्तराफाल्गुनी कृतिका रोहिणी मृगशीर्ष आर्द्रा और शतभिषा नक्षत्र हो तो अशुभ है ॥ शुक्रवार को चतुर्थी नवमी चतुर्दशी द्वितीया सप्तमी और तृतीया तिथि, रोहिणी ज्येष्ठा मघा आश्लेषा और पुष्य नक्षत्र हो तो अशुभ है ॥ शनिवार को पंचमी दशमी पूर्णिमा षष्ठी और सप्तमी तिथि, रेवती चित्रा हस्त उत्तराषाढा और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो अशुभ है ॥ १५९ से १६५ ॥

तिथि वार नक्षत्र के अशुभ योग यंत्र—

रवि	६	७	१२	१४	११	ज्ये	अनु	वि	म	भ	०	०
सोम	११	७	१२	१४	पूषा	उषा	चि	वि	०	०	०	०
मंगल	१०	१	११	आर्द्रा	उषा	घ	श	पूभ	०	०	०	०
बुध	३	८	१३	१	६	१४	मू	रे	अ	भ	घ	अनु
गुरु	२	७	१२	४	६	८	उफा	कृ	रो	मृ	आ	श
शुक्र	४	६	१४	२	७	३	रो	ज्ये	म	आ	पु	०
शनि	५	१०	१५	६	७	रे	चि	ह	उषा	उफा	०	०

अमृत सिद्धियोग—

रवि हत्थ सिय मिगसिर, मंगल अस्सणि य बुध अणुराहा ।
गुरु पुक्ख सुक्र रेवय, सनि रोहिणी जोग अमिता यं ।। १६६ ।।

भावार्थ—रविवार को हस्त, सोमवार को मृगशीर्ष, मंगलवार को अश्विनी, बुधवार को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती और शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो तो अमृतसिद्धि योग होता है ।

सनि रोहिणि तिजि गमणं, पाणिग्गहणं च वज्जि गुरु पुक्खं ।
परवेसं भूमस्सणि, वज्जिय मंडइ उच्छाहं ।। १६७ ।।

भावार्थ—उक्त अमृतसिद्धियोग समस्त कार्योंमें शुभ है तो भी यात्रा देशाटन) में शनि रोहिणी, विवाहमें गुरु पुष्य और गृह प्रवेशमें भौमाश्विनी वर्जित है ।। १६७ ।।

अमृत सिद्धि तिथि योगसे विषयोग—

वज्जि रवि हत्थि पंचमि, मिगसिर ससि वज्जि छट्ठि तिहिपव्वं ।

मंगल अस्सणि सत्तमि, अणुराह बुध अट्ठमिया ॥ १६८ ॥
नवमि य पुक्ख सुरगुरु, दसमी रेवई य सुक्कवारा ए।
एगारिसि सनि रोहिणि, अमियायं सव्वे विसजोगा ॥ १६६ ॥

भावार्थ—उक्त जो अमृत सिद्धि योग कहे हैं वे किसी तिथि योगसे विषयोग (अनिष्ट योग) भी हो जाते हैं, जैसे कि-रविवार को हस्त नक्षत्र अमृत सिद्धि योग है, परन्तु पंचमीका संयोगसे विषयोग हो जाता है वैसे—सोमवार को मृगशीर्ष नक्षत्र और षष्ठी तिथि, मंगलवारको अश्विनी नक्षत्र और सप्तमी तिथि, बुधवार को अनुराधा नक्षत्र और अष्टमी तिथि, गुरुवार को पुष्य नक्षत्र और नवमी तिथि, शुक्रवारको रेवती नक्षत्र और दशमी तिथि, शनिवार को रोहिणी नक्षत्र और एकादशी तिथि हो तो विषयोग हो जाते हैं ॥ १६८-१६६ ॥

अर्द्धप्रहर योग—

भाणु चउ ससि सत्तम, धरणिसूओ बीय बुध पंचाणं।
गुरु अट्ठम भिगु तीयं, छट्ठ सनि अद्धपुहराणं ॥ १७० ॥

भावार्थ-दिनमान के सोलहवे भागको अर्द्धप्रहर (यामार्द्ध) कहते है, यह रविवार को चौथा, सोमवारको सातवाँ, मंगलवार को दूसरा, बुधवार को पांचवाँ, गुरुवार को आठवाँ, शुक्रवार को तीसरा और शनिवारको छट्ठा अर्द्ध प्रहर योग है वह शुभकार्य में वर्जनीय है ॥ १७० ॥

कालवेलायोग—

थावर बिय सग सुक्कं, सुरगुरु चउ बुद्ध पण भू छट्ठं।
सोम तिय रवि अट्ठं, अद्धपुहरं कालवेलाणं ॥ १७१ ॥

भावार्थ—शनिवार को दूसरा, शुक्रवार को सातवाँ, गुरुवार को चौथा, बुधवार को पहिला, मंगलवार को छट्ठा, सोमवार को तीसरा और रविवार को आठवां अर्द्धप्रहर कालवेला संज्ञक है ॥ १६१ ॥

कुलिक योग—

सूर सग चंद छट्ठं, मंगल पण बुध चउ य गुरु तीयं ।
भिगु बीयं रविसूय इग, अद्धपुहरं कुलिक परिमाणं ॥ १७२॥

भावार्थ—रविवार को सातवाँ, सोमवार को छट्ठा, मंगलवारको पांचवाँ, बुधवार को चौथा, गुरुवारको तीसरा, शुक्रवार को दूसरा और शनिवार को पहिला यामार्द्ध कुलिक संज्ञक है।

उपकुलिकयोग—

सनि छट्ठं भिगु सत्तम, गुरु पगं बुध बीय तीय भूओ ।
चउरो ससि रवि पंचम, अद्धपुहरं तिमही उवकुलिकं ॥१७३॥

भावार्थ—शनिवार को छट्ठा, शुक्र वारको सातवाँ, गुरुवारको पहिला, बुधवार को दूजा, मंगलवार को तीसरा, सोमवार को चौथा और रविवारको पांचवाँ अर्द्धप्रहर उपकुलिक है।

कंटकयोग—

भाणाइ तिउ ससि दुग, मंगल इग बुध सत्त सउ गुरु थं ।
भिगु पंचम चउ थावर, अद्धपुहरं कंटकं असुहं ॥ १७४ ॥

भावार्थ—रविवारको तीसरा, सोमवार को दूसरा, मंगलवार को पहिला, बुधवारको सातवाँ, गुरुवारको छट्ठा, शुक्रवार

को पांचवाँ, और शनिवारको चौथा अर्द्धप्रहर कंटक संज्ञक है॥

कर्कटयोग—

सनि छट्ठि भिगु सत्तमि, अट्ठमि गुरु बुध नवमी भू दसमी।
ससि गारिसि रवि बारसि, तिहि वारं कक्कडायोगं॥ १७५॥

भावार्थ—शनिवारको षष्ठी, शुक्रवार को सप्तमी, गुरुवार को अष्टमी, बुधवारको नवमी, मङ्गलवारको दशमी, सोमवार को एकादशी और रविवारको द्वादशी ये कर्कट योग हैं, वे शुभ कार्यमें वर्जनीय हैं॥ १७५॥

यमघंटयोग-

मघ सूर ससि विसाहा, मंगल अद्दाइ बुध मूला यं।
गुरु कित्ति सुक्क रोहिणी, सनि हत्था योग यमघंटं॥ १७६॥

भावार्थ—रविवारको मघा, सोमवारको विशाखा, मंगलवारको आर्द्रा, बुधवारको मूल, गुरुवार को कृत्तिका, शुक्रवारको रोहिणी और शनिवारको हस्त नक्षत्र हो तो यमघंट योग होते हैं।

प्रकारान्तर से अन्यग्रन्थों में—

ससि विसा अस्सणि, बुद्धो मूलाइ अद्द पूफायं।
सुरगुरु कित्तिग सवणं, सूरो मघ योग यमघंटं॥ १७७॥
भूमो मघ अद्दा यं, सुक्को साईहि रोहिणी रिसि।
मन्दोइ हत्थ रेवय, पूषा उषाइ यमघंटं॥ १७८॥

भावार्थ—सोमवार को विशाखा और अश्विनी, बुधवार-को मूल आर्द्रा और पूर्वाफाल्गुनी, गुरुवारको कृत्तिका और श्रवण,

रविवारको मघा, मंगलवारको मघा और आर्द्रा, शुक्रवार को स्वाति और रोहिणी, शनिवार को हस्त रेवती पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा हो तो यमघंट योग होते हैं ॥ १७७ ॥ १७८ ॥

यमघंट फल—

जिमघं गमण मिच्चं, पाणिग्गहणं कुलो विच्छेयं च।
देवपइट्ठा मिच्चं, पुत्तो जाया न जीवंति ॥ १७९ ॥

भावार्थ—यमघंटयोग में गमन करे तो मृत्यु होवे, विवाह करे तो कुलका नाश होवे, देव प्रतिष्ठा करे तो मृत्यु होवे और पुत्र उत्पन्न हो तो जीवे नहीं ॥ १७९ ॥

उत्पातयोग-

सूर विसाहा ससि पूढ, भूमि धनिट्ठाइ बुध रेवइ य।
गुरु रोहिणि भिगु पुक्खं, ऊफा सनि योग उप्पायं ॥ १८० ॥

भावार्थ—रविवार को विशाखा, सोमवार को पूर्वाषाढ़ा, मंगलवारको धनिष्ठा, बुधवारको रेवती, गुरुवारको रोहिणी, शुक्रवारको पुष्य और शनिवारको उत्तराफाल्गुनी हो तो उत्पात योग होते है॥ १८० ॥

वारनक्षत्र मृत्युयोग—

रवि अणुराहा ससि उसा, मंगल सितभिसह बुध अस्सणिया।
गुरु मिग भिगु असलेसा, हत्था सनियोग मिच्चाई ॥ १८१ ॥

भावार्थ—रविवारको अनुराधा, सोमवारको उत्तराषाढ़ा, मंगलवार को शतभिषा, बुधवारको अश्विनी, गुरुवारको मृग-

शीर्ष, शुक्रवारको आश्लेषा, और शनिवारको हस्त नक्षत्र हो तो मृत्युयोग होते हैं ॥१८१॥

तिथि वार मृत्युयोग-

रवि भूम तिही नन्दा, ससि गुरु भद्दाइ जया बुद्धेहिं ।
भिगु रित्त सनि पुन्ना, वज्जे य मिच्चजोगाई ॥ १८२ ॥

भावार्थ—रविवार और मंगलवारको नन्दा,—१-६-११ तिथि, सोमवार गुरुवारको भद्रा—२-७-१२ तिथि, बुधवार को जया—३-८-१३ तिथि, शुक्रवार को रिक्ता—४-९-१४ तिथि और शनिवार को पूर्णा—५-१०-१५ तिथि हो तो मृत्युयोग होते हैं वे शुभकार्य में वर्जनीय है ॥ १८२ ॥

पुनः ग्रन्थान्तरे मृत्युयोग-

बुधे अस्सणि मूल, गुरु पूसा मूल सितभिस मिगायं ।
सनिहर पूसा चउरो, भिगु रोहिणि साइ असलेसा ॥ १८३ ॥
सूरो मघ अनुराहा, चन्दा ऊसा विसाह पुक्खेहिं ।
भूमे सितभिस अद्दा, भरणी मघ जोग मिच्चाई ॥ १८४ ॥

भावार्थ बुधवारको अश्विनी और मूल नक्षत्र, गुरुवारको पूर्वाषाढ़ा मूल शतभिषा और मृगशीर्ष नक्षत्र, शनिवारको पूर्वाषाढा आदि चार नक्षत्र, शुक्रवार को रोहिणी स्वाति और आश्लेषा, रविवारको मघा और अनुराधा, सोमवार को उत्तराषाढा विशाखा और पुष्य, मंगलवारको शतभिषा आर्द्रा भरणी और मघा नक्षत्र ये मृत्युयोग होते हैं ॥ १८३ ॥ १८४ ॥

काणयोग-

जिट्ठ रवि ससि अभीय, मंगल पूभद्द बुध भरणीयं।
गुरु अद्दा मघ सुक्कं, चित्ता सनि जोग काणायं ।। १८५।।

भावार्द्द- रविवारको ज्येष्ठा, सोमवार को अभिजित्, मंगलवारको पूर्वाभाद्रपद, बुधवार को भरणी, गुरुवारको आर्द्रा, शुक्रवारको मघा और शनिवार को चित्रा हो तो काण योग होते है ।। १८५ ।।

वार नक्षत्र सिद्धियोग-

मूलारकि सवण ससि, मंगल उभद्द बुध किरतीयं।
गुरु पुणव्वसु पूप्फा, भिगु साई सनि सिद्धि जोगाणं ।। १८६ ।।

भावार्थ—रविवारको मूल, सोमवार को श्रवण, मंगलवारको उत्तराभाद्र पद, बुधवारको कृत्तिका, गुरुवार को पुनर्वसु, शुक्रवारको पूर्वाफाल्गुनी और शनिवार को स्वाति नक्षत्र हो तो सिद्धियोग होते हैं ।। १८६ ।।

तिथि वार सिद्धियोग-

नन्दा भिगु भद्दा बुह, जाया भूमे हि रित्त मंदायं।
पुन्ना तिहीय गुरु यं, जोगं सिद्धाइ कज्ज सव्वे ।। १८७ ।।

भावार्थ—शुक्रवार को नन्दा १-६-११ तिथि, बुधवार को भद्रा—२-७-१२ तिथि, मंगलवार को जया-३-८-१३ तिथि, शनिवार को रिक्ता—४-६-१४ तिथि और गुरुवार को पूर्णा—५-१०-१५ तिथि सिद्धियोग है, इन में सर्वकार्य करना अच्छा है ।।१८७।।

त्रिपुष्करयोग-

पूभद्द कित्ति पुणव्वसु, उफा ऊसा विसाह रवि सनि भू।
भद्दा तिही तिपुक्कर, जमलं मिग चित्त धणिट्ठायं ॥ १८८ ॥

भावार्थ—पूर्वाभाद्रपद कृत्तिका पुनर्वसु उत्तरा फाल्गुनी उत्तराषाढ़ा और विशाखा ये नक्षत्र, रविवार शनिवार और मंगलवार, भद्रा—२—७-१२ तिथि, इन के संयोग से त्रिपुष्कर योग होते है और शनि रवि मंगलवार, भद्रातिथि, मृगशीर्ष चित्रा और धनिष्ठा ये नक्षत्र इनके संयोग से यमल योग बनते हैं।

संवर्त्तकयोग-

गुरु नवमी भिगु बीया, ससि तेरसि भूम चवद्दिसि तिहीया।
बुध एगा रवि सत्तमि, पंचमि सनि योग संवत्ता॥ १८९॥

भावार्थ—रविवार को सप्तमी, सोमवार को त्रयोदशी, मंगलवारको चतुर्दशी, बुधवारको प्रतिपदा, गुरुवार को नवमी, शुक्रवार को द्वितीया और शनिवार को पंचमी हो तो संवर्त्तक योग होते हैं॥ १८९॥

पुनः संवर्त्तकयोग-

गुरु छट्ठी नवमी तिहि. भिगु बीया तीय बुध इग तीया।
ससि सत्तमि तेरसि या, सत्तमि रवि भूम चवद्दिसि या॥१९०॥
सनि पंचमि संवत्तक, जोगं अवजोग मज्झ सव्वेहिं।
न हु कीरइ वीवाहं, मंगलकाले हि वज्जेहिं ॥ १९१ ॥

भावार्थ—गुरुवारको षष्ठी और नवमी, शुक्रवारको द्वितीया

और तृतीया, बुधवारको प्रतिपदा और तृतीया, सोमवारको सप्तमी और त्रयोदशी, रविवारको सप्तमी, मंगलवारको चतुर्दशी और शनिवारको पंचमी हो तो संवर्त्तक योग होते है इसमें विवाह आदि नहीं करना और मंगलिक कार्य समय में इनका तो अवश्य ही त्याग करना ॥ १६० ॥ १६१ ॥

शूलयोग—

ससि सूलं भू गंडं, अतिगंजं बुद्ध भिगु वाघाई ।
वज्ज गुरु सनि वैधिति, भाण विक्खंभो सूलाई ॥ १६२ ॥

भावार्थ—सोमवारको शूल, मङ्गलवारको गंड, बुधवारको अतिगण्ड,शुक्रवारको व्याघात,गुरुवारको वज्र, शनिवारको वैधृति और रविवारको विष्कम्भ योग हो तो शूल योग होते हैं ॥१६२॥

शत्रुयोग-

बुध अद्दा भिगु रोहिणी, पुक्ख ससी सितभिसा य सनिवारा ।
गुरु विसाहा विज्जिय, सत्तूजोगइ सव्वाइं ॥ १६३ ॥

भावार्थ—बुधवारको आर्द्रा, शुक्रवारको रोहिणी, सोमवारको पुष्य, शनिवारको शतभिषा, गुरुवारको विशाखा, "रविवारको भरणी और मङ्गलवारको उत्तराषाढ़ा" ये शत्रु योग है ॥

भस्म और दंडयोग-

भाणाइ गिण हु दिण, रिसि सत्तम भसमाइ तहइ पनरमयं ।
दण्डयोगो हि ईयं, मासं मज्झेइ इगवारं॥ १६४ ॥

भावार्थ—सूर्य नक्षत्रसे चन्द्रनक्षत्र सातवां हो तो भस्म-

योग और पंद्रहवां हो तो दंडयोग होता है, ये दोनों प्रत्येक मास में एकवार आते है ॥ १६४ ॥

कालमुखीयोग–

पञ्चमि मघ चउ उत्तर, नवमि य कित्तगिय तीय अणुराहा ।
अट्ठमि रोहिणि मज्झिम, कालमुहीयोग ए कहिया ॥ १६५ ॥

भावार्थ—पंचमीको मघा, चतुर्थीको तीनों उत्तरा, नवमी को कृत्तिका, तृतीयाको, अनुराधा और अष्टमीको रोहिणी, ये कालमुखी योग हैं ॥ १६५ ॥

वज्रमुसलयोग याने ग्रहजन्मनक्षत्र–

रवि भरणी ससि चित्ता, उसा भोमाइ बुद्ध धणिट्ठायं ।
गुरु उफा भिगु जिट्ठा, रेवय सनि वज्जमुसलायं ॥ १६६ ॥
गहजम्म रिसी एए; वज्जे वीवाह कीरए विहवं ।
गमणारम्भे मरणं, चेईय ट्ठवण विद्धंसं ॥ १६७ ॥
सेवाइ हवइ निप्फल, करसण अफलोइ दाह गिहपवेसं ।
विज्जारंभे य जडं, वत्थु वावरइ भसमायं ॥ १६८ ॥

भावार्थ—रविवार को भरणी, सोमवारको चित्रा, मङ्गल वार को उत्तराषाढ़ा बुधवार को धनिष्ठा, गुरुवार को उत्तरा-फाल्गुनी, शुक्रवार को ज्येष्ठा और शनिवार को रेवती नक्षत्र हो तो ये वज्रमुसल योग होते है और ये नक्षत्रों ग्रहोंके जन्मनक्षत्र भी है। ऐसा पाकश्रीग्रन्थ में भी कहा है कि—

"भर१ चित्तु२ त्तरसाढा३, धणि४ उत्तरफग्गु५ जिट्ठ६ रेवइआ७ ।
सूराइ जम्मरिक्खा, एएहिं वज्जमुसल पुणो ॥ १ ॥"

इन ग्रहजन्मके नक्षत्रमें विवाह नहीं करना, करे तो वैधव्य हो जावे, देशाटन करे तो मरण होवे, प्रतिष्ठा करे तो चैत्य (देवालय) का नाश हो जावे, किसी की भी सेवा करे तो निष्फल होवे, खेती करे तो निष्फल होवे, गृहप्रवेश करे तो अग्नि का उपद्रव हो, विद्यारम्भ करे तो मूर्ख बना रहे; नवीन वस्त्र पहिरे तो भस्म हो जाय, पंचमहाव्रतादि व्रत लेवे तो व्रत भंग हो जाते है।

प्रसंगोपात व्रतादि लेने का मुहूर्त्त-

"हत्थुत्तर सवण तिगं, रेवइ रोहिणि पुणव्वसुण दुगं।
अणुराहा सम भणिया, सोलस आलोयणा रिक्खा ॥ १ ॥
आलोयणा तिहि नंदा, भद्दा जया य पुण्णा य।
रवि ससि बुध गुरु सुक्का-वारा करणाण विट्ठि त्रिणा ॥२॥

भावार्थ— हस्त चित्रा स्वाति उत्तराफल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा श्रवण धनिष्ठा शततारका रेवती अश्विनी रोहिणी मृगशीर्ष पुनर्वसु, पुष्य और अनुराधा ये सोलह नक्षत्र, नंदा भद्रा जया और पूर्णा ये तिथि, रविवार सोम बुध गुरु और शुक्र ये वार, विष्टि करण को छोड़कर बाकी के छ करण, ये सभी ही सम्यक्त्व के बारह व्रत लेने में, गुरु आगे प्रायश्चित् लेनेमें, योगसाधन में, तपश्चर्या करने में इत्यादिक शुभ कार्य में फलदायक है, आरम्भसिद्धि के तृतोय विमर्शमें श्लो० ३६ में भी कहा है कि—

"नियमालोचनायोग—तपोनन्द्यादि कारयेत्।
मुक्त्वा तीक्ष्णोग्रमिश्राणि, वारौ चारशनैश्चरौ ॥"

तीक्ष्ण उग्र और मिश्र संज्ञक नक्षत्रको तथा मंगल और शनि

वार को छोड़कर बाकीके नक्षत्र तथा वार को नियम आलोचना योग तपस्या और उस की नन्दि आदि विधि करना।

क्षौरकर्ममुहूर्त—

रोहिणि माहा विसाहा,ति उत्तरा भरणि कित्तिआ य अणुराहा।
इअ मुंडण लोयकए, इंदो वि न जीवए व रिक्खं ॥ १ ॥

भावार्थ—रोहिणी मघा विशाखा तीनों उतरा भरणी कृतिका और अनुराधा इन नक्षत्रों में मुंडन या लोचकर्म करानेसे इन्द्र भी नहीं जीवता है ॥ १ ॥

पुनः—

नवमी य चउत्थि चऊद्दिसि, अट्ठमि छट्ठी अमावसी तिहिया।
वारा सनि रवि मंगल, मुंडण लोयं न कारेई ॥ २ ॥

भावार्थ—नवमी चतुर्थी चतुर्दशी अष्टमी षष्ठी और अमावास्या इन तिथियों में, तथा शनिवार रविवार और मङ्गलवार इन में मुंडन या लोच कराना नहीं ॥ २ ॥

पुनर्वसु तथा पुष्य, धनिष्ठा श्रवणे सदा।
एभिश्चतुर्भि र्धिष्णैश्च, लोचकर्म तु कारयेत् ॥ ३ ॥

भावार्थ-पुनर्वसु पुष्य धनिष्ठा और श्रवण इन चारों ही नक्षत्रों में लोचकर्म करना अच्छा है ॥३॥

भद्रा (विष्टि करण) फल-

किण्हा ततिय दसमी, सत्तमि चवद्सी धुरहि कल्लाणी।
धवलं ते चउ गारिसि, अट्ठमि पुन्निम पढमाए ॥ १६१ ॥

निसि भद्दा जय दीहं, दीहा भद्दाइ जय निसा होइ ।
तह दूसणोइ न हवइ, सव्वे कज्जाइ सारंति ॥ २०० ॥
रिपुसिंहार विवाए, भयभीया राउदंसणे जाए ।
विज्जु बुलावणाए, भद्दा सिट्ठाइ एयाए ॥ २०१ ॥
देवीपूया पमुहं, रिक्खाबंधेय ण्हाण रिउ समए ।
दीवुच्छवि रज उच्छवि, कल्लाणी नत्थि दोसा यं ॥२०२॥

भावार्थ—कृष्ण पक्ष की तृतीया और दशमी के उत्तरार्द्ध में याने रात्रिमें तथा सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में याने दिन भद्रा होती है। शुक्लपक्ष में चतुर्थी और एकादशी के उत्तरार्द्ध में याने रात्रि में तथा अष्टमी और पूर्णिमाके पूर्वार्द्ध में (दिन में) भद्रा होती है। जो रात्रिकी भद्रा दिन में हो और दिनकी भद्रा रात्रिमें हो तो जयकारी है। तब सर्व कार्य आरम्भ कर सकते हैं, कोई भी भद्रा का दोष होता नहीं है। शत्रुका नाश करनेमें विवाद में, भयसे डरने में, राजदर्शन में और वैद्य बोलाने में भद्रा श्रेष्ठ है। देवी देवता के पूजन में, रक्षा बंधन में, ऋतुस्नान में, देव महोच्छव में और रजः ओच्छव (होली) में भद्रा का दोष नहीं होता ॥ २०२ ॥

३० घडी में भद्रा के अंग विभाग—

वयण पण कंठे इग, हियए इग्गार नाहि चउरो य ।
कडि सडयं पुच्छो तिय, कल्लाणी तीस घडियाइं ॥ २०३ ॥
मुह हाणि कंठ मिच्चं, लिवइ दरिद्दं च नाहि धी नासं ।
कडि कलह पुच्छि बहु-जय हयय अह रासि सिसिगिणियं ॥२०४॥

भावार्थ—प्रथम पांच घड़ी भद्रा का मुख है, पीछे एक घड़ी कंठ है एवं ग्यारह घड़ी हृदय, चार घड़ी नाभि, छ घड़ी कम्मर और तीन घड़ी पूच्छ है ; इस तरह भद्रा की तीस घड़ी के अंग विभाग हैं,उसका फल—मुख हानिकारक, कंठ मृत्युकारक, हृदय दारिद्रकारक, नाभि बुद्धिनाशकारक, कम्मर कलहकारक और पूच्छ बहुत जयकारी है। भद्रामें चन्द्रराशि गिनना ॥२०३-४

भद्रावास—

छग वसह मकर कक्के सग्गे, धण मिणहु कन्न तुल नागे।
अलि सिंह कुंभ मीने, मानव लोगम्मि कल्लाणी ॥ २०५ ॥
सुरलोई सुहदाई, आगम सुह नाग मिच्च दुहदाई।
तिजि सित छ घड़ी मुहाई, तिघड़ी तम पक्खि अंताई ॥ २०६॥

भावार्थ—मेष वृष मकर और कर्क राशिके चन्द्रमा को भद्रा स्वर्गमें, धन मिथुन कन्या और तुला राशिके चन्द्रमाको भद्रा पाताल में, वृश्चिक सिंह कुंभ और मीन राशिके चन्द्रमा को भद्रा मानव लोकमें रहती है। स्वर्गमें भद्रा होतो सुखदायी है, पाताल में भद्रा होतो सुखका आगमन करने वाली होती है और मृत्यु लोकमें भद्रा हो तो दुःखदायी है। शुक्ल पक्षमें ६ घड़ी आदि की और कृष्ण पक्षमें ३ घड़ी अन्त्य की छोड़ना चाहिये इसका कारण नीचे बतलाते है ॥

सित पक्खि सप्पिणीहिं, पक्खे किसणे हि विच्छकी भणिया।
सप्पिणी मुहोइ परिहरि, पुच्छो विच्छीय तिजि भद्दा ॥२७॥

वासर सप्पोइ मुही, भद्दा रयणीय हवइ विच्छिया।
विवरीया जा भद्दा, सा भद्दा भद्दफलदाई॥ २०८॥

भावार्थ—शुक्लपक्ष में भद्रा सर्प्पिणी संज्ञक है और कृष्णपक्ष में वृश्चिकी (विछूनी) संज्ञक हैं। सर्प्पिणी का मुख और विछूनी का पूछ वर्जनीय है। पुनः—दिनको भद्रा सर्पिणी मुख है और रात्रिको विछूनी मुख हैं। विपरीत याने दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को हो तो शुभ फल दायक है॥ २०८॥

संमुखी भद्रा विचार....

पुव्वे चवदिसि पढमं, अट्ठमि अगनेय बीय पुहरम्मि।
दक्खणि सत्तमि ति पुहर, पुन्निम नेरइय चउ पुहरं॥ ०६॥
अत्थमिणे चउत्थी पण, दसमी सड पुहर वाईकुणाए।
उत्तरि सग एगारिसि, तीया ईसाण अट्ठमयं॥ २१० ॥

भावार्थ—चतुर्दशी के प्रथम प्रहर को पूर्वदिशा में, अष्टमी के दूसरा प्रहर को आग्नेयकोण में, सप्तमी के तीसरा प्रहर को दक्षिणदिशा में, पूर्णिमा के चौथा प्रहर को नैऋतकोण में, चतुर्थी के पाँचवां प्रहर को पश्चिमदिशा में, दशमी के छट्ठा प्रहर को वायव्य कोण में, एकादशीके सातवाँ प्रहर को उत्तरदिशा में और तृतीया के आठवाँ प्रहर को ईशान कोण में भद्रा संमुखी है। ये गमनादि में वर्जनीय हैं॥ २०९। २१०॥

पुनः—

किसिणि तिया अग्गी हि, सत्तमि नेरइय दसमि वाए हि।
ईसाणे चवदिसियं, भद्दा हवई कूणमुहं॥२११॥

सुकल चउत्थी दक्खणि, अट्ठमि पच्छिमि इगारिसी उत्तरे।
पुन्निम पुव्वदिसे हि, हवए भद्दामुहं तिजयं ॥२१२॥

भावार्थ—कृष्ण पक्ष की तृतीया को अग्निकोण में, सप्तमीको नैऋत कोण में, दशमी को वायव्यकोण में और चतुर्दशी को ईशानकोण में भद्रा का मुख होता है। शुक्लपक्ष की चतुर्थी को दक्षिण दिशा में, अष्टमी को पश्चिम दिशा में, एकादशी को उत्तर दिशा है, और पूर्णिमा को पूर्व दिशा में भद्रा का मुख है। वह गमनादि में वर्जनीय है ॥२११॥ २१२॥

कुम्भचक्र—

कुम्भाकारं चक्कं, कारियं रेहा तिरिच्छयं ठवियं।
तसेव उड्ढ अहियं, अहियं अडवीस रिसि कमसो ॥२१३॥
पुन्नोइ अहो नामं, रित्तो उड्ढोइ भाण रिसि ठवियं।
गमणो रिसीय जत्थ य, हवए फल कहिय तत्थेव ॥२१४॥
रित्तोइ गमण रित्तं, पुन्नो संपुन्नं हवइ लाहोयं।
सव्वे जोइस मज्झे, पसंस कुम्भचक्कायं ॥२१५

भावार्थ—कुम्भ के आकार चक्र बनाकर बिच में एक तिर्छी रेखा करना उसमें अश्विनी नक्षत्रसे एक ऊपर दूजा नीचे, तीसरा उपर चौथा नीचे, इस मुजब अठ्याईस नक्षत्र अनुक्रम से रखना। इसमें नीचे के नक्षत्रों पूर्ण संज्ञक है और ऊपर के नक्षत्रों रिक्त संज्ञक है। गमनादि कार्य में उनके नाम सदृश फल कहना जैसे—रिक्त नक्षत्रोंमें गमन रिक्त (व्यर्थ) होता है। और पूर्ण नक्षत्र में पूर्ण लाभ होता है। यह कुम्भ-चक्र सब ज्योतिश्शास्त्र मध्ये प्रशंसनीय है ॥२१३ से २१५॥

यमदंष्ट्रायोग—

अणुराहाए बीया, उत्तर तीया मघाइ पंचमिया ।
कर मूला सत्तमिया, अट्ठमि संयुत्त रोहिणिया ॥२१६॥
तेरसि चित्ता साई, एए यमदाढजोग दुहदाई ।
उत्तम कच्छू न काइ, कीरइ नहु जई करइ माई ॥२१७॥

भावार्थ—द्वितीया को अनुराधा, तृतीया को तीनों उत्तरा, पञ्चमी को मघा, सप्तमी को हस्त और मूल, अष्टमी १को रोहिणी, त्रयोदशी को चित्रा और स्वाति हो तो यमदाढयोग २होते हैं वह दु:खदायी हैं इसमें उत्तम कार्य कुछ भी करना नहीं, यदि करेतो मरण होता है ॥ २१६।२१७ ॥

चरयोग——

सूरे हि पुव्वसाढा, चंदा अद्दाइ भूवि साहाइ ।
बुद्धो रोहिणी सुक्र, मघा सनि मूला हवइ चरयोगा ॥२१८॥

भावार्थ—रविवार को पूर्वाषाढा, सोमवार को आर्द्रा, मंगलवार को विशाखा, बुधवार को रोहिणी, शुक्रवार को मघा और शनिवार को मूल नक्षत्र हो तो, चरयोग होते हैं। आरम्भ सिद्धि में "रविवार को उत्तराषाढा और गुरुवार को शतभिषा" इतना विशेष कहा है ॥२१८॥

नोट—१नारचन्द्र टीप्पन में 'षष्ठी को रोहिणी' लिखा है।
२ उसको 'यमकतृरी योग' भी कहते हैं।

तिथि कालपाश—

पुव्वे पच्छिम नंदा, अगने वायव्व कूण भद्दाए।
उत्तरि दक्खणि जाया, नेरय ईसाण रित्ताए ॥२१९॥
पुन्ना नग आगासे, एएहि कालपास तिहि जुत्ता।
कालो समुह पासं, कज्जं वज्जोइ गमणाई ॥ २२० ॥

भावार्थ—पूर्व पश्चिम दिशा में नंदा तिथि को, आग्नेय वायव्य कोण में भद्रा तिथि को, उत्तर दक्षिण दिशा में जया तिथि को, नैऋत ईशान कोण में, रिक्ता तिथि को, आकाश और पाताल में पूर्णा तिथि को कालपाश हैं; संमुख कालपाश हो तो, गमनादि कार्य नहीं करना ॥ २१९।२२० ॥

वारकालपाश—

वारेहिं रवि उत्तरि, सोमे वाए हि भूम पच्छिमयं।
बुध नेरय गुरु दक्खणि, अग्गी भिगु पुव्वि सनि वज्जं ॥२२१॥

भावार्थ—रविवार को उत्तर दिशा में, सोमवार को वायव्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम दिशा में, बुधवार को नैऋत कोण में, गुरुवार को दक्षिण दिशा में, शुक्रवार को अग्निकोण में और शनिवार को पूर्व दिशा में कालपाश है, वह गमनादि कार्य में वर्जनीय है ॥ २२१ ॥

छींक विचार—

पुव्वे हि छीया मरणं, अग्गी दुहदेई दक्खणे कलहं।
नेरय किलेस किरइ, भमवु अही छीया प ॥ २२२ ॥

पच्छिम भोयणमिट्ठं, वाए बहुपेम उत्तरे सुहयं ।
ईसाण कूण संपय, छीया गयणे हि जयलाह ॥२२३ ॥
छीया सच्चा तिविहा, बाला नर इत्थि अप्पणो भणीया ।
बुड्डो वाहि सलेसम, बहुए छीए निरत्था यं ॥२२४॥

भावार्थ—पूर्व दिशा में छींक हो तो मरण भय होवे, अग्नि-कोण में छींक हो तो दुःखदायी होवे, दक्षिण दिशा में कलहकारी नैर्ऋत में क्लेशकारी और अधिक भय देने वाली है। पश्चिम में छींक हो तो मिष्ट भोजन मिले, वायव्य कोण में बहुत प्रीतिकारी, उत्तर दिशा में सुखकारक और ईशान कोण में छींक हो तो संपत की प्राप्ति होती है, गमन करने से जयलाभ होता है। बालक नर स्त्री और अपनी ये तीन प्रकार की छींक सच्ची कही है, बुढ़ा व्याधि-ग्रस्त और श्लेष्मवाले इन्हों की और अधिक छींक ये सब निरर्थक जानना ॥ २२२ से २२४ ॥

विजय मुहूर्त—

घडिया हीण दु पुहरो, दु पुहरो घडिय होइ अहियारो ।
विजयोइ नाम जोगं, सव्वे कज्जाइ साज्झेई ॥ २२५ ॥

भावार्थ—दो प्रहर में एक घड़ी न्यून और एक घड़ी अधिक एवं दो घड़ी मध्याह्न विजयनामा योग होता है। उसमें सब कार्य करना प्रशस्त है॥ २२५ ॥

पुनः—

अत्थं गएहिं भाणो, गयणे ताराइ पिक्ख एके वि ।
विजयोइ नाम योगं, हवत व कज्ज सविसेसं ॥ २२६ ॥

भावार्थ—सूर्यास्त के बाद आकाश में एक भी तारा देख पड़े जब तक विजययोग होता है इसमें भी मांगलिक कार्य विशेषतया करना अच्छा हैं॥ २२६ ॥

प्रस्थान मुहूर्त्त विचार—

यात्रा मुहूर्त में यदि कार्य वशात् गमन में विलम्ब हो तो जो अपने मनकी प्रिय वस्तु हो उसका प्रस्थान करना आरम्भ सिद्धि में कहा हैं कि—

"प्रस्थानमन्तरिह कार्मुकपञ्चशत्याः,
पाद्रु र्धनुर्दशकतः परतश्च भूत्यैः।
सामान्य १ माण्डलिक २ भुमिभुजां, ३ क्रमेण,
स्यात् पञ्च सप्त दश चात्र दिनानि सीमा ॥१॥"

अपने घरसे प्रस्थान ५०० धनुष (२००० हाथ) दूर पर रखना चाहिये, या १० धनुष (४० हाथ) से अधिक दूर रखना मगर न्यून नहीं रखना, प्रस्थान करने बाद सामान्य लोग पांच दिन एक जगह ठहरे नहीं, मण्डलिक राजा सात दिन और महाराजा दश दिन एक जगह ठहरे नहीं, इससे अधिक दिन रह गया तो दूसरा शुभ मुहूर्त में गमन करे॥

प्रस्थान निषेध—

अद्द मघा असलेसा, भरणी कित्तिय विसाह उत्तरयं।
चवदिसि पुन्निम अमावसि, रवि भूमनि गमण न कारई ॥२२७॥

भावार्थ—आर्द्रा मघा आश्लेषा भरणी कृत्तिका विशाखा

तीनों उत्तरा चतुर्दशी पूर्णिमा अमावास्या रविवार मंगलवार और शनिवार इनमें गमन (देशाटन) करना नहीं ॥ २२७ ॥

मध्यम प्रस्थान---

साई पुव्वा रोहिणि, सवणं चित्ता धणिट्ठ सियभिसयं ।
चउत्थी छट्ठी अट्ठमि, नवमी बारिसी मज्झिसिया ॥२२८॥

भावार्थ—स्वाति तीनों पूर्वा रोहिणी श्रवण चित्रा धनिष्ठा शतभिषा चतुर्थी षष्ठी अष्टमी नवमी और द्वादशी इनमें प्रस्थान मध्यम फलदायक है ॥ २२८ ॥

उत्तम प्रस्थान---

मिगसिर मूल पुणव्वसु, हत्था जिट्ठाइ पुक्ख अणुराहा ।
रेवय अस्सणि रिक्खं, वारा ससि सुक्क गुरु बुद्धं ॥२२९॥
पडिवा बिय तिय पंचमि, दसमी एगारिसि य तिरिसिया ।
सत्तमि जोगे गमणं, उत्तम कहियाइ विबुहे हिं ॥२३०॥

भावार्थ—मृगशीर्ष मूल पुनर्वसु हस्त ज्येष्ठा पुष्य अनुराधा रेवती और अश्विनी ये नक्षत्र, सोम बुध गुरु और शुक्र ये वार तथा १ । २ । ३ । ५ । ७ । १० । ११ । १३ ये तिथि, इन्होंके योग में गमन करना उत्तम हैं ऐसा विद्वानोंने कहा है ॥ दिनशुद्धि ग्रन्थमें कहा है कि—

' पुव्वदिसि सव्व कालं, रिद्धि निमित्तं विहारसमयम्मि ।
पुस्सस्सिणि मिग हत्था रेवइ सवणा गहेअव्वा ॥ १ ॥ "

पूर्व दिशा तरफ कोई भी समयमें धन उपार्जनके लिये जाते

समय पुष्य अश्विनी मृगशीर्ष हस्त रेवती और श्रवण ये छ नक्षत्रों हो तो गमन करना लाभ है ॥ नारचंद्र टीप्पनमें भी—

" चुथि नुमि चऊदिसिइ, जइ सनिवार लहंति।
एकइ कज्जिइ चल्लीया, कज्ज सयाइ करंति ॥ १ ॥ "

चतुर्थी नवमी और चतुर्दशीको शनिवार हो तो एकही कार्यके लिये चले तो सभी ही कार्य कर आवे ॥

तारा बल—

ताराबल हि तमपक्खि, गणियं रिक्ख जम्म लेइ दिणरिक्खं।
नन्दोइ भाग ठवियं, वड्डो अङ्काइ फल कहियं ॥ २३१ ॥
उत्तम मज्झिम अधमा, तारा कहिएहिं तिविह हीरेहिं।
उत्तम चउ सउ नवमी, मज्झिम अट्ठमि य बीय पढमं ॥ २३२ ॥
अधम तीय पण सत्तम, चन्दबल तप पक्खे हि नहु होई।
ताराबल गहियं, कंत विदेसि हि जं घरणी ॥ २३३ ॥

भावार्थ—कृष्ण पक्षमें ताराका बल देखना चाहिये, जन्म नक्षत्रसे दिन नक्षत्र पर्यन्त गिनना उसको नवसे भाग देना शेष रहें वे तारा जानना। श्री हीर ज्योतिषीने उत्तम मध्यम और अधम ये तीन प्रकारकी तारा कही है—चौथी छट्ठी और नवमी तारा उत्तम है, पहिली दूजी और आठवीं तारा मध्यम है, तीसरी पांचवीं और सातवीं तारा अधम है। कृष्ण पक्षमें चन्द्र का बल नहीं होता जिससे ताराबल ग्रहण करना जैसे—विदेशसे आये हुए पतिको स्त्री प्रेमसे ग्रहण करे वैसे ॥ २३१ से २३३ ॥

ताराके नाम—

शान्ता मनोहरा क्रूरा, विजया कुकुलोद्भवा ।
पद्मिनी रक्षसी वीरा, आनन्दा नवमी स्मृता ॥ २३४ ॥

भावार्थ—पुर्वोक्त क्रमसे गिननेसे ये तारा होती हैं— शान्ता मनोहरा क्रूरा विजया कुकुलोद्भवा पद्मिमी राक्षसी वीरा और आनन्दा ये नाम हैं । इनका नाम सदृश फल जानना ।। २३४ ॥

रवि शुभाशुभ—

इग बिय चउ पण सत्तम, अट्ठम नवमो य बारमो सूरो ।
वाही विदेसदाई, लाहो तिय सड दस इगारं ॥ २३५ ॥

भावार्थ—अपना जन्म राशिसे सूर्य— पहिला दूजा चौथा पांचवां सातवां आठवां नववां और बारहवां हो तो अशुभ है व्याधि करे और देशाटन करावे । तीसरा छट्ठा दशवाँ और, ग्या-रहवां हो तो शुभ है लाभ करे ॥ २३५ ॥

चन्द्रमा शुभाशुभ-

ससि जम्म करइ पुट्ठिं, बीउ मज्झिमि य तिय निवमाणं ।
कीरइ कलह चउत्थं, पंचम अत्थोइ भंसायं ॥ २३६ ॥
छट्ठो लच्छि अप्पइ, सत्तम निवपूय अट्ठ दुहदाई ।
नवणि सिद्धि दसमं, रुद्दं जय बार मिच्चाय ॥ २३७ ॥

भावार्थ—पहिला चन्द्रमा हो तो पुष्ठी करे, दूसरा मध्यम फल दायक, तीसरा नृपमान कारक, चौथा कलहकारी, पांचवां अर्थ-नाश कारक, छट्ठा लक्ष्मी दायक, सातवां राज्यमान, आठवां दुःख-

दायी है, नववां और दशवां सिद्धि कारक, ग्यारहवां जयकारी, बारहवां मृत्यु कारक हैं ॥ २३६-२३७ ॥

पुनः—

ससि पढमं तिय सड सग, दसमं इग्गार निच्छ सुहदाई।
तह धवलं बीय पण नव, चन्दो चउ अट्ठ बार दुहयं ॥ ५३८ ॥

भावार्थ—अपना जन्म राशिसे चन्द्रमा—पहिला तीसरा छट्ठा सातवां दशवां और ग्यारहवां निश्चयसे सुखदायक है, एवं शुक्लपक्षमें दूसरा पांचवां और नववां भी सुखदायक है, चौथा आठवां और बारहवां सर्वदा दुःख कारक है ॥ २३८ ॥

चन्द्रवास फल-

छग सिंहे धन पुव्वइ, मकरे विस कन्न दक्खिणे वासो।
तुल कुम्भ मिथुन पश्चिम, उत्तरि ससि मीन अलि करके ।२३९।
ससि सम्मुह धन लाहो, दाहिण करएहिं सव्व संपइया।
पुट्ठेइ चन्द मरणं, वामं करएहिं धण हीणं ॥ २४० ॥

भावार्थ—मेष सिंह और धन राशिका चन्द्रमा पूर्व दिशामें, वृष कन्या और मकर राशिका चन्द्रमा दक्षिण दिशामें; तुला कुंभ और मिथुन राशिका चन्द्रमा पश्चिम दिशामें, मीन वृश्चिक और कर्क राशिका चन्द्रमा उत्तर दिशामें रहता हैं। सम्मुख चन्द्रमा हो तो धनका लाभ करे, दक्षिण तर्फ होतो सर्व सम्पत्ति देवे, पूंठे हो तो मृत्यु करे और बांये तर्फ हो तो धन हानी करे ॥ २३९-२४० ॥

भौम शुभाशुभ-

जम्मो बिय चउ पण सग, अट्ठम नवमो इ बार भूम दुहं ।
तिय सड दसम इगारस, भूमो धण धन्न बहु कीर्त्ती ॥ २४१ ॥

भावार्थ—अपना जन्म राशिसे मङ्गल— पहिला दूजा चौथा पांचवां सातवां आठवां नववां और बारहवां हो तो दुःखदायी है तीसरा छट्ठा दशवां और ग्यारहवां हो तो धन धान्य का लाभ कारी होता है ॥ २४१ ॥

बुध शुभाशुभ-

बारस इग नव पण सग, बुद्धो भयभीय सव्व कालायं ।
बिय तिय चउ सड अट्ठम, दसमं एगार बुध सुहं ॥ २४२ ॥

भावार्थ—अपना जन्म राशिसे बुध—बारहवां पहिला नववां पांचवां और सातवां हो तो सर्वदा भयकारी है । दूसरा तीसरा चौथा छट्ठा आठवां दशवां और ग्यारहवां सुखकारी है ॥२४२॥

गुरु शुभाशुभ—

बारसमो दसमो चउ, जम्मो सड अट्ठ तीय गुरु दुहुओ ।
नव बिय पण सग गारस, सुरगुरु सुह देइ बहुओयं ॥ २४३ ॥

भावार्थ—अपना जन्म राशिसे गुरु-बारहवाँ दशवां चौथा पहिला छट्ठा आठवां और तीसरा दुःखदायी है । नववां दूसरा पांचवां सातवां और ग्यारहवां बहुत सुखकारक है ॥ २४३ ॥

शुक्र शुभाशुभ—

सग बारस सड तिय नव, सुक्को भट्ठोइ सव्व कज्जाई ।
इग बिय चउ पण अट्ठम, दसम एगार भिगु सुहओ ॥ २४४ ॥

भावार्थ— अपना जन्म राशिसे-शुक्र सातवां बारहवां छट्ठा तीसरा और नववां हो तो सर्व कार्य नाश करे। पहिला दूसरा चौथा पांचवां आठवां और ग्यारहवां हो तो सुखकारी है ॥२४४॥

शनि शुभाशुभ—

मन्दो इग दुग चउ सग, नवमो अड दसम बार सुह हरई।
तीओ पण सड गारस, अत्थो लाभं च रविपुत्तो ॥ २४५ ॥

भावार्थ—अपना जन्म राशिसे शनि- पहिला दूसरा चौथा सातवां आठवां नववां दशवां और बारहवां हो तो सुखका नाश करे। तीसरा पांचवां छट्ठा और ग्यारहवां हो तो अर्थका लाभ करे ॥ २४५ ॥

राहु केतु शुभाशुभ—

इग बिय ति पण सत्तम, अट्ठम नवमोइ बार राहु दुक्खं।
चउरो सड दस गारस, राहो केऊ च सुहदाई ॥ २४६ ॥

भावार्थ---अपना जन्म राशिसे राहु और केतु— पहिला दूसरा तीसरा पांचवां सातवां आठवां नववां और बारहवां हो तो दुःख-दायी है। चौथा छट्ठा दशवाँ और ग्यारहवाँ हो तो सुखकारक है ॥ २४६ ॥

नवग्रह राशि प्रमाण—

रवि मासं इग रासी, हवई दो दिवस सवा सिसियायं।
मास दवड्ढ मङ्गल, बुद्धो रासीय दिण अढारं ॥ २४७ ॥
सुरगुरु तेरस मासं, दीहा पणवीस सुक्क संखायं।
सनि मास तिस भणियं, राहो मासं च अढारं ॥ २४८ ॥

भावार्थ—सूर्य एक राशि पर एक मास रहता है, चन्द्रमा सवा दो दिन, मंगल डेढ मास, बुध अठारह दिन, गुरु तेरह मास शुक्र पच्चीस दिन, शनि तीस मास और राहु केतु अठारह मास एक राशि पर रहते हैं ॥२४७-२४८ ॥

पुनः ग्रन्थान्तरे-

इग रासि मास तिय गहं, सूरं बुध सुक्क दवड्ढ मङ्गलयं ।
सनि तिस तेर गुरु तम, अढारह ससि सवा दो दिवसं ॥२४८॥

भावार्थ—एक राशि पर सूर्य बुध और शुक्र ये तीनों ग्रह एक एक मास रहते हैं, मङ्गल डेढ मास, शनि ३० मास, गुरु १३ मास, राहु केतु १८ मास और चन्द्रमा सवा दो दिन एक राशि पर रहता है ॥ २४९ ॥

नवग्रहके पाये (नवमांश) का प्रमाण-

रवि घडिय वीस दिन तिय, इग पाय सोम पन घडियाइं ।
भूमो इग पय पण दिण, बुद्धो दिण बीय इग पाए ॥ २५० ॥
गुरु इग पाय पमाणं, बोहा तेयाल घडी वीसाइं ।
वीस घडी दिण तिय भिगु, मन्दो दिण एग सउ पाए ॥ २५१ ॥
राहो इ केतु उभयं, वासर सट्ठीयए पाएहिं ।
भणियं जोइस मज्झे, नवग्गह पाए पमाणम्मि ॥ २५२ ॥

भावार्थ—सूर्य के प्रत्येक पाये (नवमांश) ३ दिन और २० घडीके है, चन्द्रमाके १५ घडीके, मङ्गलके ५ दिनके, बुधके २ दिनके, गुरुके ४३ दिन और २० घडीके, शुक्रके ३ दिन और २० घडीके, शनिके १०० दिनके और राहु केतुका प्रत्येक नवांश ६० दिनके हैं।

इस मुआफिक ज्योतिश्शास्त्र मध्ये नवग्रह के पायेका प्रमाण कहा है ॥ २५० से २५२ ॥

राशि पर आनेबाद कौनग्रह कब फल दायक है-

लग्गे य फलं रवि भू, अद्धं छेयम्मि फलइ सनि चन्दं ।
बुध सुक्के फल अद्धं, गुरुयं फलइ उत्तरयं ॥ २५३ ॥

भावार्थ—सूर्य और मङ्गल राशिको आदिमें, शनि और चंद्रमा अर्द्ध राशि भोगने पर, बुध और शुक्र राशिके मध्यमें और गुरु राशिके उत्तरार्द्ध में फल दायक है ॥ २५३ ॥

पंच ग्रह वक्रीके तथा अतीचारके दिन संख्या और फल—

तेहुत्तरि तेवीसा, इग सउ तेरुत्तराइ पइताला ।
इग सय चाला मङ्गल, पञ्च गह वक्कीय दिणमाणा ॥ २५४ ॥
तह अइयारा भणियं, मङ्गल पमुहा य पनर दसहायं ।
पणयाला य दसायं, अन्तो नव वीस वासरयं ॥ २५५ ॥
भूमोइ अणावुट्ठी, बुद्धो वक्कीय रस खयंकारी ।
गुरु वक्कीयं सुभिक्खं, वक्की भिगु करइ जण सुहयं ॥२५६॥
मन्दो वक्की कीरइ, पुहवी रोराइ रुण्ड मुण्डयं ।
धण धन्न वत्थ नासइ, हवए रोगं बहू लोए ॥ २५७ ॥

भावार्थ—मङ्गल ७३ दिन, बुध २३, गुरु ११३ दिन, शुक्र ४५ दिन और शनि १४० दिन वक्री रहते है । तथा मङ्गल १५ दिन, बुध १० दिन, गुरु ४५ दिन, शुक्र १० दिन और शनि १८० दिन अतीचारी रहते है ॥

मङ्गल वक्री हो तो अनावृष्टि, बुध वक्री हो तो रस क्षयकारी, गुरु वक्री हो तो सुभिक्ष, शुक्र वक्री हो तो मनुष्य सुखकारी और शनि वक्री हो तो पृथ्वी रुण्ड मुण्ड करे, धन धान्य वस्तुका नाश करे और लोगोंमें रोगका उपद्रव होवे ।। २५४ से २५७ ॥

रविवास चक्र—

रविचक्क सवइ कज्जे, जोइज्जइ सूररिक्खट्ठवियायं ।
गिणियाइं जम्मरिसियं, कहियं फल नारिनरअंगे ॥ २५८ ॥
तिय सिरि तियमुहि खंध दु, बाहू दो हत्थ दोइ पण हियय
नाही गुज्झो इग इग, जानू दो पाय सडयायं ॥ २५९ ॥
रवि मत्थपइ रज्जं, वयणे रस मिट्ठ कन्धि निवमाणं ।
थान भट्ठो बाहू, चोरभयं हत्थि लच्छि हियं ॥ २६० ॥
नहि सुह गुज्झि असुहं, जाणूं दिसि गमण अप्प आउ पए ।
रवि वासइ चक्कं, ईय भणियं पुव्वाइ जोइसिय ॥ २६१ ॥

भावार्थ—रविचक्र सर्व कार्यमें देखना चाहिये, सूर्य नक्षत्र से जातक के जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनना और नर नारी के अङ्ग-विभागमें— ३ मस्तक पर, ३ मुख पर, २ स्कन्ध पर, २ हाथ पर ५ हृदय पर, १ नाभि पर, १ गुह्य स्थान पर, २ जानु पर, और ६ पांव पर इस मुजब अनुक्रमसे रखकर फल कहना, यथा— मस्तक पर रवि हो तो राज्य प्राप्ति, मुख पर हो तो मिष्ठ भोजन की प्राप्ति, स्कन्ध पर हो तो नृपमान हो, बाहु पर हो तो स्थान भ्रष्ट, हाथ पर हो तो चोर भय, हृदय पर हो तो लक्ष्मी प्राप्ति, नाभि पर हो तो सुख मिले, गुह्य पर हो तो अशुभ हो, जानु पर

हो तो विदेश गमन हो और पांव पर हो तो अल्प आयुष हो । यह रविवास चक्र प्राचीन ज्योतिषीयों ने कहा है ॥ २५८ से २६१ ॥

चन्द्रवास चक्र-

ससिचक्क सवइ कज्जे, जोइज्जइ चन्दरिक्खठवियाइं ।
गिणियाइं जम्म रिक्खिय, कहिय फल नारिनरअंगे ॥ २६२ ॥
सड वयणे सड पुट्ठे, हत्थे सडयाइ गुज्झे तीयाइं ।
तिय चरण तिय कंठे, सगवीसं रिक्ख अणुक्कमसो ॥ २६३ ॥
ससि वयणि हाणि कीरइ, धन लाहो पुट्ठि हत्थि भयं निवय ।
गुज्झे हि निवमाणं, चरणं ठिय भङ्ग कंठि सुहं ॥ २६४ ॥

भावार्थ—चन्द्रचक्र सर्व कार्य में देखना चाहिये, चन्द्रनक्षत्र से जातकके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनना और नर नारीके अङ्ग विभागमें- ६ मुख पर, ६ पृष्ठ पर, ६ हाथ पर, ३ गुह्य पर, ३ पाँव पर और ३ कंठ पर, इस अनुक्रमसे स्थापित कर फल कहना— चन्द्रमा मुख पर हो तो हानि करे, पृष्ठ पर हो तो धन लाभ करे, हाथ पर हो तो राज्य भय, गुह्य पर हो तो नृपमान, चरन पर हो तो परिभ्रमण और कंठ पर हो तो सुख हो ॥ २६२ से २६४॥

भौमवास चक्र-

भूचक्क सवइ कज्जे, जोइज्जइ भूमरिक्ख ठवियाइं ।
गिणियाइं जम्म रिक्खिय, कहिय फल नारिनर अंगे ॥ २६५ ॥
तिय वयणे तिय नयणे, तिय सिरं चउ करे हि दो कंठे ।
हियय पणं तिय गुह्ये, पाए चत्तारि सगवीसं ॥ २६६ ॥

भूमेइ वयण रोगं, नयणे सुह होइ मत्थए रज्जं ।
कर कंठे रोग धणु हिय, गुज्झे परभोग गमण पए ॥ २६७ ॥

भावार्थ—भौम चक्र सर्व कार्यमें देखना चाहिये; भौम नक्षत्र से जातकके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनना और नर नारीके अङ्ग विभागमें— ३ मुख पर, ३ नेत्र पर, ३ मस्तक पर, ४ हाथ पर, २ कंठ पर, ५ हृदय पर, ३ गुह्य पर, और ४ पांव पर, इस अनुक्रम से स्थापित कर फल कहना- भौम मुख पर हो तो रोग, नेत्र पर हो तो सुख, मस्तक पर हो तो राज्य, हाथ और कंठ पर हो तो रोग, हृदय पर हो तो धन, गुह्य स्थान पर हो तो परस्त्री लंपट और पांव पर हो तो देशाटन हो ॥ २६५ से २६७ ॥

बुधवास चक्र—

बुहचक्क सवइ कज्जे, जोइज्जइ बुद्धरिक्ख ठवियाइं ।
गिणियाइं जम्म रिसिय, कहिय फल नारिनर अंगे ॥२६८॥
चउरो सिरि तिय वयणं, चउ कर वामे हि चउ करे दहिणे ।
पण हियय इग गुज्झे, तिय तिय पय वाम दहिणे हिं ॥ २६९॥
बुध सिरे भू हवई, वयणे मिट्ठन्न वाम कर कट्ठं ।
कर दाहिण हियए सुह, गुज्झे रोगं पये भमणं ॥ २७० ॥

भावार्थ—बुध चक्र सर्व कार्य में देखना चाहिये, बुध नक्षत्र से जातकके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनना और नर नारीके अङ्ग विभागमें— ४ मस्तक पर, ३ मुख पर, ४ बांये हाथ पर, ४ जिमनें हाथ पर, ५ हृदय पर, १ गुह्य पर, ३ बांये पांव पर और ३ जिमनें पांव पर, इस अनुक्रमसे स्थापित कर फल कहना-- बुध

मस्तक पर हो तो राज प्राप्ति, मुख पर हो तो मिष्ठान्न प्राप्ति, बांये हाथ कंठ जिमना हाथ और हृदय पर हो तो सुख, गुह्यस्थान पर हो तो रोग और पांव पर हो तो देश भ्रमण हो २६८से२७०॥

गुरुवास चक्र-

गुरुचक्क सवइ कज्जे, जोइज्जइ गुरुरिक्खठवियाइं ।
गिणियाइं जम्म रिसियं, कहियं फल नारिनर अंगे ॥२७१॥
चउ सिरि चउ कर दाहिणि, कंठे इग पण हिएहिं सड पाए ।
चउरो हि वाम करयं, नयणे तिय रिक्ख सगवीसं ॥ २७२ ॥
गुरु मत्थए हि लाभं: दाहिण कर कंठ हियय कल्लाणं ।
पाए विदेसगमणं, वामङ्कर असुह नयण सुहं ॥ २७३ ॥

भावार्थ—गुरु चक्र सर्व कार्य में देखना चाहिये, गुरुनक्षत्र से जातकके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनना और नरनारीके अंग विभागमें- ४ मस्तक पर, ४ जिमना हाथ पर, १ कंठ पर, ५ हृदय पर, ६ पांव पर, ४ बांये हाथ पर, ३ नेत्र पर, इस मुजब अनुक्रम से स्थापित कर फल कहना- गुरु मस्तक पर हो तो लाभ, जिमना हाथ कंठ और हृदय पर हो तो कल्याण, पांव पर हो तो विदेश गमन, बांये हाथ पर हो तो अशुभ और नेत्र पर हो तो सुख हो॥

शुक्रवास चक्र-

भिगुचक्क सवइ कज्जे, जोइज्जइ सुक्करिक्खठवियाइं ।
गिणियाइं जम्मरिसियं, कहियं फल नारिनर अंगे ॥ २७४ ॥
तिय मुहं पण सिरयं, सड पाए चउ करे हि दक्खणयं ।
हियये बीय ठवेयं, चउ कर वामें हि तिय गुज्झं ॥ २७५ ॥

भिगु वयणे धणुनासा, मत्थय लाभं च पाइ दुहदाहं।
कर दाहिणे इ हियय', वाम करं गुज्झे जय लाभं ॥ २७६ ॥

भावार्थ—शुक्र चक्र सर्व कार्य में देखना चाहिये, शुक्र नक्षत्र से जातकके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनना और नर नारीके अङ्ग विभागमें—३ मुख पर, ५ मस्तक पर, ६ पांव पर, ४ जिमना हाथ पर, २ हृदय पर, ४ बांये हाथ पर और तिन गुह्य भाग पर, इस अनुक्रमसे स्थापित कर फल कहना- शुक्र मुख पर हो तो धननाश करे, मस्तक पर हो तो लाभ, पांव पर हो तो दुःखदायी, जिमना हाथ हृदय बांये हाथ और मस्तक इतने पर हो तो जय लाभ करे।

शनिवास चक्र-

सनिचक्क सवइ कज्जे, जोइज्जइ मन्दरिक्ख ठवियाइं।
गिणियाइं जम्म रिसिय', कहिय' फल नारिनर अङ्के ॥ २७७ ॥
इग मुहि चउ दक्खिण करि, पाए सड एहि वाम कर चउरो।
पण हियए तीयं सिरि, लोयण बीए हि गुज्झ दुगं ॥ २७८ ॥
सनि वयणे इ विरोधं, दक्खिण करि खेम पाइ परिभमणं।
वाम करे चल चित्तं, हियए हेलाइं सुह हवई ॥ २७६ ॥
मत्थेइ भूवमाणं, लोयण सोहग्ग गुज्झि किं असुहं।
सनिवासय चक्कं, इय भणियं पुव्वाइ जोइसियं ॥ २८० ॥

भावार्थ—शनि चक्र सर्व कार्यमें देखना चाहिये, शनिनक्षत्र से जातकके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनना और नर नारीके अङ्ग विभागमें— १ मुखपर, ४ जिमना हाथ पर, ६ पांव पर, ४ बांये हाथ पर, ५ हृदय पर, ३ मस्तक पर, २ नेत्र पर और २ गुह्य-

स्थान पर, इस अनुक्रमसे स्थापित कर फल कहना—शनि मुख पर हो तो विरोध, जिमना हाथ पर हो तो सुख, पांव पर हो तो परिभ्रमण, बांये हाथ पर हो तो चञ्चल चित्त, हृदयपर हो तो सुख होवे, मस्तक पर हो तो नृपमान, नेत्र पर हो तो सुख और गुह्य पर हो तो अशुभ होवे, यह शनिवास चक्र प्राचीन ज्योतिषीयोंने कहा है ॥ २७७ से २८० ॥

शनि दृष्टि तिथि फल—

इग बिय तिय पुव्वे सनि, चउत्थी पञ्चमिय छट्ठि दक्खणयं ।
सग अड नवमी पच्छिम, उत्तरि दह रुद्द बारिसिया ॥ २८१ ॥

भावार्थ—प्रतिपदा द्वितीया और तृतीया को पूर्व दिशामें, चतुर्थी पंचमी और षष्ठी को दक्षिण दिशामें, सप्तमी अष्टमी और नवमी को पश्चिम दिशामें, दशमी एकादशी और द्वादशीको उत्तर दिशामें शनिकी दृष्टि है ॥ २८१ ॥

राहुकेतुवास चक्र—

तमचक्र सव्वइ कज्जे, जोइज्जइ राहुरिक्ख ठवियाइं ।
गिणियाइं जम्मरिसियं, कहियं फल नारिनर अङ्गे ॥ २८२ ॥
तिय मुहि तिय कर सड पय,हियय पणं तिय सिरम्मि चउ चक्खू ।
तिय गुज्झे सगवीसं, जह राहो भणियं तह केऊ ॥२८३ ॥
राहोइ मुहिय रोगं, दक्खिण करएहिं सुहं आगमणं ।
पाए विदेस भमणं, हियए बहु खाससासं च ॥ २८४ ॥
मत्थेइ राइदंडइ, सत्तूखय चक्खू गुज्झि गिहकलहं ।
तमवासइ चक्कं, इय भणियं पुव्वाइ जोइसियं ॥ २८५ ॥

भावार्थ—राहु चक्र सर्व कार्यमें देखना चाहिये, राहु नक्षत्र से जातकके जन्म नक्षत्र पर्यन्त गिनना और नर नारीके अङ्ग विभागमें—३ मुख पर, ३ हाथ पर, ६ पांव पर, ५ हृदय पर, ३ म-

स्तक पर, ४ नेत्र पर और ३ गुह्य पर, इस अनुक्रमसे स्थापित कर फल कहना "जैसा राहुचक्र कहा है वैसा केतुचक्र भी जानना" राहु मुख पर हों तो रोग, जिमना हाथ पर हो तो सुख पांव पर हो तो विदेश भ्रमण, हृदय पर हो तो बहुत श्वास खांसी हो, मस्तक पर हो तो राजदंड हो, नेत्र पर हो तो शत्रुका क्षय और गुह्य पर हो तो गृहमें कलह हो, यह राहु चक्र प्राचीन ज्योतिषीयोंने कहा हैं ॥ २८२ से २८५ ॥

चन्द्रावस्था—

पवास नट्ठ मरणं, जय हासो रई य कीड निद्दा य।
भुगत जरा कंपोयं, सुच्छिय बार सम ससि वच्छा ॥ २८६ ॥
घडि दह इग पल पनरस, गिणियं परवास रासि मेसाई ।
पणतीसा सउ ससि घडी, नामं परिणाम सरिस फलं ॥ २८७ ॥

इति श्री ज्योतिषसारे प्रथम प्रकीर्णकं समाप्तम् ।

भावार्थ—प्रवास नष्ट मरण जय हास्य रति क्रीडा निद्रा भुक्त जरा कम्प और सुस्थित ये बारह चन्द्र अवस्था हैं, इनको लानेका प्रकार—सामान्यतया चन्द्र राशिका भोग १३५ घडी है उसको बारहसे भाग देनेसे ३ घडी १५ पल होते हैं इतने समय प्रत्येक अवस्था रहती है। मेषका चन्द्र हो तो प्रवाससे वृष का चन्द्र हो तो नष्ट से, मिथुनका चन्द्र हो तो मरणसे, एवं मीनका चन्द्र हो तो सुस्थितसे आरंभ कर बारह अवस्था गिनना और नाम सदृश फल कहना ॥२८६।२८७॥ ॥इति शुभम्॥

वीरजिननिर्वाणाब्दे, निध्युदधिजिने (२४४९) मिते ।
आद्यज्येष्ठे कृष्णपक्षे, प्रतिपद्गुरुवासरे ॥ १ ॥

श्रीसौराष्ट्रराष्ट्रान्तर्गत पादलिप्तपुर निवासिना पं० भगवानदासाख्यजैनेन कृतास्य प्राकृतगाथाबद्धज्योतिषहीरे प्रथमप्रकीर्णस्य बालावबोधिका नाम्नी भाषाटीका समाप्ता। कालिकातायाम् ॥